पाक्षिक

मूल्य ₹ 5

पाथेय कण

भाद्रपद शु.14, युगाब्द 5122 वि.2077,1 सितम्बर, 2020

भीतर पढ़ें

6 इतिहास पुरुष ठा. रामसिंह

8 क्या बेंगलुरु हिंसा प्रायोजित थी ?

13 गिलोय बढ़ाती है रोग प्रतिरोधक क्षमता

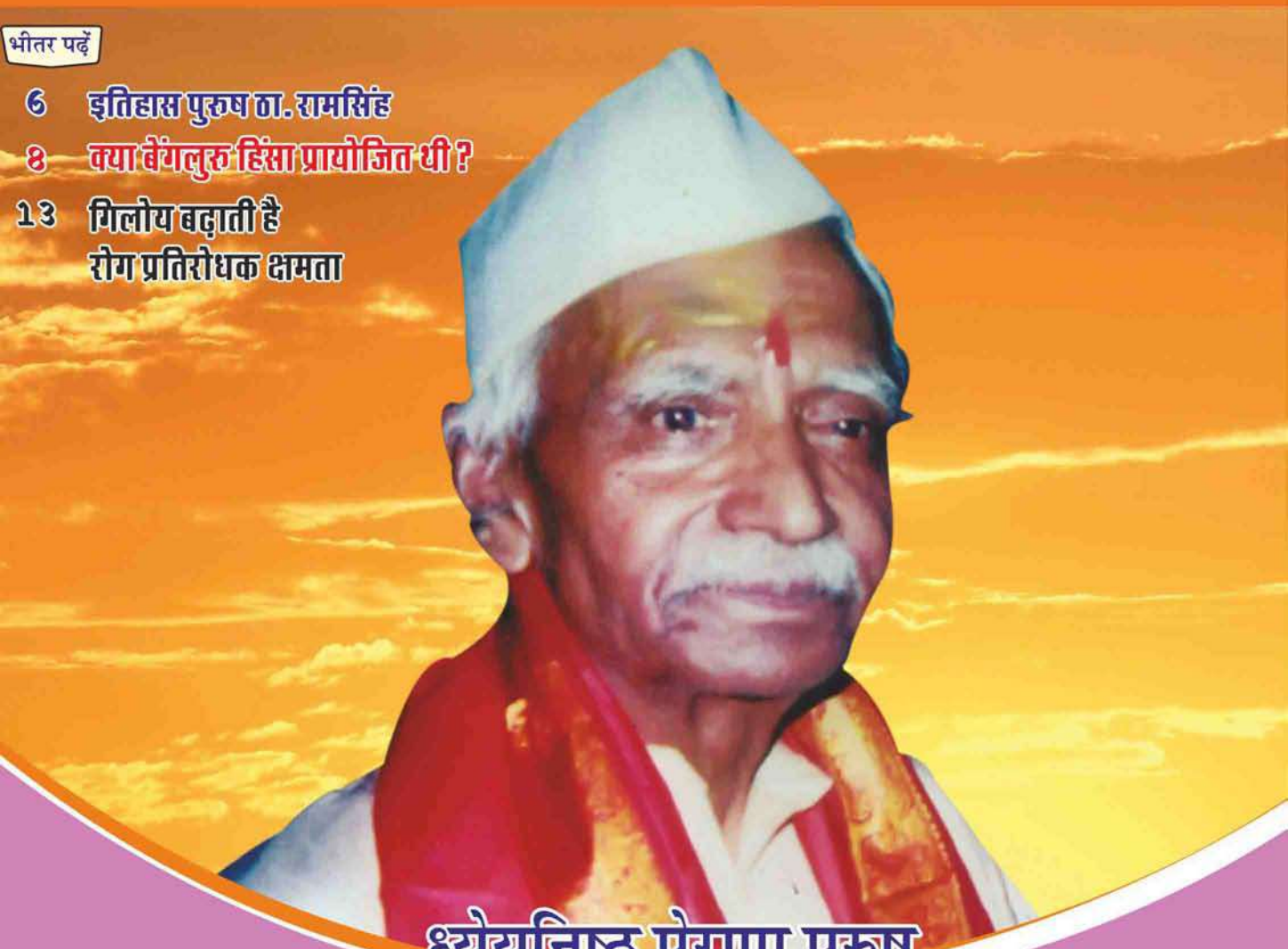

ध्येयनिष्ठ प्रेरणा पुरुष - दादा भाई

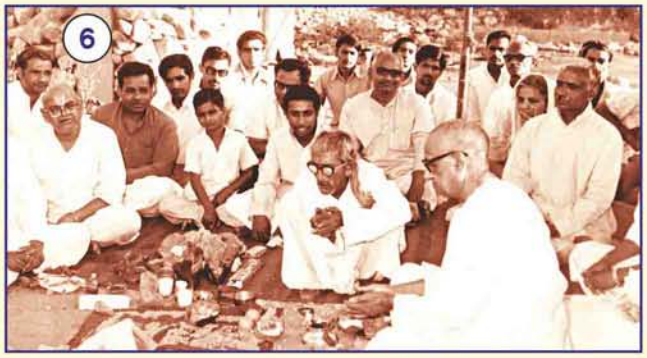

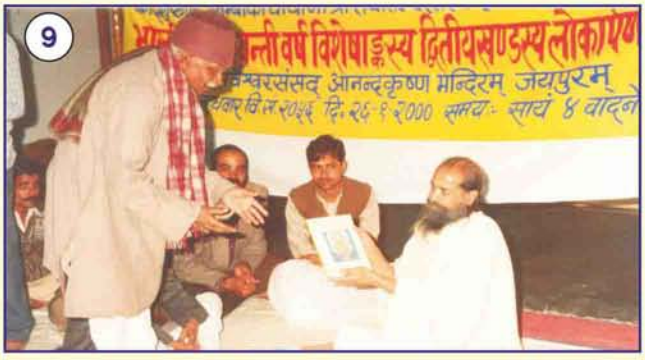

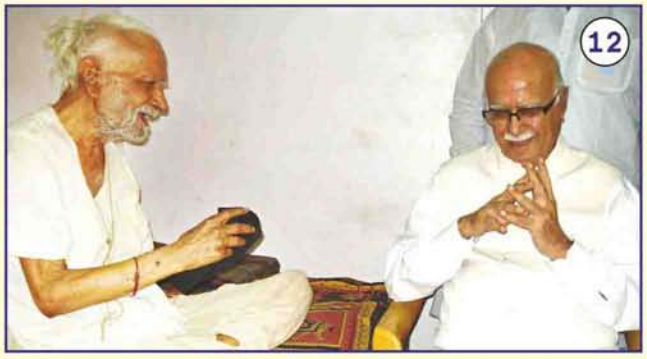

चित्र परिचय – 1. अमरूदों का बाग (जयपुर) में राष्ट्र शक्ति संगम के लिए भूमि पूजन करते हुए दादा भाई 2 अ.भा.प्रचार प्रमुख श्रीकांत जोशी को पाथेय कण की ओर से सम्मानित करते हुए दादा भाई 3. पेजावर मठ के प्रमुख विश्वेश्वर तीर्थ स्वामी को 'भारती' का विशेषांक भेंट करते हुए दादा भाई 4. अमृत महोत्सव (2009) में दादा भाई को सम्मानित करते हुए भागवत जी, भैरोंसिंह शेखावत तथा डा.मुरली मनोहर जोशी 5. श्री गुरुजी के षष्ठिपूर्ति (1966) के अवसर पर संघ के प्रमुख कार्यकर्ताओं के साथ दादाभाई (पीछे की पंक्ति से बाएं से तीसरे खड़े हैं) 6. भारती भवन के शिलान्यास के अवसर पर तत्कालीन प्रांत संघचालक चाचाजी एवं दादा भाई 7. शाहपुरा में बाबा साहब आपटे के साथ दादा भाई एवं ब्रह्मदेव जी 8. पाथेय कण फैक्स मशीन के शुभारम्भ अवसर पर प्रसिद्ध क्रांतिकारी वचनेश त्रिपाठी के साथ दादा भाई 9. 'भारती' के स्वर्ण जयंती विशेषांक का निम्बार्क पीठाधीश श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी से विमोचन कराते दादा भाई 10. कांची कामकोटि पीठ के पूज्य शंकराचार्य स्वामी जयेन्द्र सरस्वती जयपुर स्थित 'भारती' के कार्यालय में 11. ज्योतिषपीठ के पूज्य शंकराचार्य स्वामी वासुदेवानन्द का दादा भाई को आशीर्वाद 12. रुग्ण शैय्या पर श्री लालकृष्ण आडवाणी का स्वागत करते हुए दादा भाई

।। ॐ संभूत्या अमृतमश्नुते ।।
संगठन से ही अमरत्व की प्राप्ति होती है।।

**मातृभूमि की धर्मध्वजा का अभिनंदन वंदन।
राष्ट्र देवता के चरणों में पावन शब्द नमन।।**

पाक्षिक
पाथेय कण
भाद्रपद शु.14, युगाब्द 5122, वि.2077
1 सितम्बर 2020
वर्ष 36 : अंक 08

परम सुहृद पाठक-गण,

सप्रेम नमस्कार।

सभी कार्यकर्ताओं से आग्रह है कि वार्षिक व 15वर्षीय पावतियाँ जल्द से जल्द कार्यालय पर भिजवाने का श्रम करें। जयपुर शहर के वार्षिक व 15 वर्षीय अंक डाक से भेजे जा रहे हैं अंक प्राप्त न होने की स्थिति में कार्यालय में संपर्क करें।

जुलाई द्वितीय से अब तक 4 अंक प्रेषित किये जा चुके हैं। अंक न मिलने पर पाठक खंड (तहसील), जिले के कार्यकर्ताओं से संपर्क करें। आशा है कि राष्ट्र जागरण के इस कार्य में आपका सहयोग निरंतर मिलता रहेगा।

इसी विश्वास के साथ

जय श्रीराम।

आपका

प्रबंध सम्पादक

सहयोग राशि

वार्षिक ₹ 100/- पन्द्रह वर्षीय ₹1000/-

प्रबंधकीय कार्यालय

'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.)

सम्पर्क : 7976582011, 9414447123, 9929722111

Website: www.patheykan.in
E-mail: patheykan@gmail.com

लव-जिहाद : इस्लामीकरण का तालिबानी हथियार

लव-जिहाद के मामले देश भर से लगभग प्रतिदिन ही प्रकाश में आ रहे हैं। एक अनुमान के अनुसार जानकारी में आने वाले मामले केवल 10 प्रतिशत ही हैं, शेष मामले परिवार की सामाजिक प्रतिष्ठा तथा युवती के भविष्य की चिंता को लेकर प्रकाश में ही नहीं आते हैं। समय, स्थान, लड़की-परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के अनुसार इन मामलों का स्वरूप बदलता रहता है। एक बात जो सब मामलों में समान रूप से पाई जाती है, वह है अपनी पहचान और धर्म छिपाकर सोशल मीडिया के माध्यम से युवती को दोस्ती के लिये प्रेरित करना, धीरे-धीरे प्रेम जाल में फंसाना, ब्रेन वाश कर घर से भागने के लिये तैयार करना, शादी अथवा बिना शादी के शारीरिक संबंध स्थापित करना, इन अन्तरंग पलों के आपत्तिजनक फोटो-वीडियो बना निरंतर शारीरिक शोषण तथा मतांतरण के लिये ब्लेकमेल करना।

यह सामाजिक बीमारी भारत के सबसे शिक्षित प्रांत केरल से शुरू हुई और धीरे-धीरे कर्नाटक, तमिलनाडु होते हुए आज पूरे देश में फैल चुकी है। समाचारों के अनुसार 2009 से 2014 के बीच केरल से 4000 लड़कियाँ गायब हो गई। हिन्दू जन जागृति समिति के अनुसार कर्नाटक में 30000 लडकियां लव-जिहाद की शिकार हुई। राजस्थान में भी पिछले दो माह में लव-जिहाद के पांच मामले प्रकाश में आए हैं। देश भर में चर्चित केरल के हदिया मामले की सुनवाई करते हुए वहाँ के हाईकोर्ट ने स्वीकार किया था कि अकेले केरल में 4000 से अधिक लव-जिहाद तथा धर्म परिवर्तन के मामले हैं। इसी मामले की सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने भी लव-जिहाद मामलों की जांच एनआईए से करवाने के आदेश दिये थे। इस मामले का जिक्र इसलिये समयोचित है ताकि हमें यह समझ में आ सके कि ये कोई अकेले मामले नहीं होते हैं, बल्कि इनके पीछे राष्ट्रविरोधी कट्टरपंथी मुस्लिम संगठन काम कर रहे हैं, जिन्हें ऐसे कामों के लिये अथाह पैसा तथा मजहबी समर्थन प्राप्त है। इस मामले में मुस्लिम लड़के के समर्थन में पोपुलर फ्रंट ऑफ इण्डिया तथा उससे जुडे कई इस्लामिक संगठन यथा सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ इण्डिया, नेशनल वूमन्स फ्रंट,सत्य सरनी इत्यादि खडे थे,जिन्हें खाड़ी देशों से जिहादी कार्रवाइयों के लिए धन मिलता है। हथियारों, सोने तथा ड्रग्स की तस्करी भी इन संगठनों की आय का बड़ा जरिया है। इनके नापाक मंसूबों को पूरा करने के लिए देश भर में फैली मस्जिदें तथा मदरसे आधारभूत ढांचे के रूप में सहायक हैं।

भारत एक लोकतांत्रिक देश है, जहां सत्ता के लिये कांग्रेस सहित लगभग सभी दल मुस्लिम तुष्टीकरण में संलग्न हैं। ये दल भूल गये हैं कि इस्लाम के मूल उद्देश्यों में से एक है काफिर देश (दार-उल-हर्ब) को मुस्लिम देश (दार-उल-इस्लाम) बनाना और भारतीय मुसलमान इसे सर्वोपरि मानकर कार्य-व्यवहार करता है। मुस्लिम समुदाय अधिक से अधिक बच्चे पैदा कर अपनी संख्या बढ़ा रहा है।

...शेष पृष्ठ 17 पर

**आकारैरिङ्गितैर्गत्या चेष्टया भाषणेन च।
नेत्रवक्त्रविकारैश्च लक्ष्यतेऽन्तर्गतं मनः।।**

शक्लसूरत से, इशारों से, चालढाल से, चेष्टा या हरकत से, बोलने-चालने से और आँख तथा मुख के ढंग से मन के छिपे हुए विचारों का बोध हो जाता है।

(पञ्चतन्त्र/मित्रभेद/42)

ध्येयनिष्ठ प्रेरणा पुरुष – दादा भाई

आज चारों ओर अंग्रेजीकरण का वातावरण है, संस्कृत को मृतप्राय भाषा मानने की भूल भी हो रही है। ऐसे में पं. गिरिराज प्रसाद शास्त्री उपाख्य दादा भाई ने संस्कृत की मासिक पत्रिका 'भारती' का कुशल संचालन कर लोगों को एक नई राह दिखाई।

दादा भाई का पूरा नाम पंडित गिरिराज प्रसाद शास्त्री है। उनका जन्म कामां (जिला भरतपुर) में 9 सितम्बर 1919 अनन्त चतुर्दशी वि.स 1976 को आचार्य आनन्दी लाल जी तथा चन्द्रा बाई जी के घर में हुआ। इनके पूर्वज राजवैद्य थे। दादा भाई ने 6ठीं कक्षा तक अध्ययन के बाद संस्कृत की प्रवेशिका, साहित्य उपाध्याय तथा शास्त्री उपाधियाँ ली। यजुर्वेद का विशेष अध्ययन करते हुए उन्होंने इंटरमीडिएट की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। 13 वर्ष की अवस्था में उनका विवाह गुलाब देवी के साथ हो गया था। गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए दादा भाई को एक पुत्र तथा एक पुत्री प्राप्त हुई। शिक्षा पूर्ण कर वे जयपुर के रथखाना विद्यालय में संस्कृत पढ़ाने लगे।

उन दिनों नथमल जी के कटले में कभी कभी संघ की शाखा लगती थी। 1942 में श्री रामेश्वर लाल अजमेर से एक वर्ष के लिए विस्तारक बनकर जयपुर आए। उन्होंने कटले की शाखा को नियमित कर दिया और स्वयंसेवकों की संख्या बढ़ाने के प्रयास किए। 1942 में बी.एस सी. के छात्र श्री शिव कुमार के कहने पर दादा भाई ने उनके साथ शाखा जाना प्रारम्भ किया। व्यायाम के शौकीन दादाभाई को शाखा के खेल, सूर्य नमस्कार आदि बहुत अच्छे लगे। शाखा में स्वयंसेवकों के व्यवहार, विशेषकर प्रत्येक छोटे-बड़े का अभिवादन करने के अभ्यास ने दादा भाई को प्रभावित किया। नए होने के बावजूद स्वयंसेवकों के प्रेम, भ्रातृत्व ने उन्हें संघ शाखा से स्थाई रूप से जोड़ दिया, जो जीवन पर्यन्त चलता रहा। इसके बाद उन्होंने वर्ष 1943(मेरठ), 1944 (मेरठ) तथा 1945 (नागपुर) में संघ शिक्षा वर्ग के तीनों प्रशिक्षण भी प्राप्त किये।

स्वाधीनता से पूर्व जयपुर रियासत में संघ पर प्रतिबंध था। अतः शाखाएँ 'सत्संग' के नाम से लगती थीं। प्रांत प्रचारक श्री बच्छराज व्यास ने सावधानी रखने के लिये प्रमुख कार्यकर्ताओं को उपनाम दिये थे। बच्छराज जी का नाम भैया जी, इन्दौर के माणक जी का नाम बाबू भैया, राधाकृष्ण रस्तोगी का नाम चाचा जी और पं. गिरिराज शास्त्री को उनकी पहलवानी और हृष्ट-पुष्ट शरीर के कारण दादा भाई उपनाम दिया गया। तब से उनका यही नाम सब ओर प्रचलित हो गया।

तृतीय वर्ष का शिक्षण कर दादा भाई जुलाई 1946 से दिसम्बर 1946 तक सीकर के नगर प्रचारक, जनवरी 1947 से 1948 तक सीकर जिला प्रचारक, 1948 से 1950 तक सीकर झुंझुनु जिले के प्रचारक रहे। उसके पश्चात आप जयपुर लौट गये। प्रतिबंध काल में नौकरी छूटने पर सरकार्यवाह श्री एकनाथ रानाडे ने संघ कार्यालय पर उनके रहने की व्यवस्था कर दी। बाबा साहब आप्टे की प्रेरणा से दादा भाई ने 1950 की दीपावली से देश की प्रथम मासिक संस्कृत पत्रिका 'भारती' निकालनी प्रारंभ की। इस पत्रिका के माध्यम से दादाभाई ने अपने ज्ञान तथा समर्पण द्वारा संस्कृत भाषा की अतुलनीय सेवा जीवन पर्यन्त की। आज भी यह पत्रिका अनवरत रूप से प्रकाशित की जा रही है।

संघ दायित्व

दादा भाई को 1942 में मुख्य शिक्षक, 1943 में प्रथम वर्ष शिक्षा वर्ग करके लौटने के बाद 3 शाखाओं का कार्यवाह, 1944 में द्वितीय वर्ष करके आने के बाद 4-5 शाखाओं की जिम्मेदारी, 1945 में तृतीय वर्ष करके आने के बाद जयपुर के नगर कार्यवाह का दायित्व दिया गया। इसके बाद उन्हें विभाग कार्यवाह का दायित्व दिया गया। प्रचारक जीवन से 1950 में जयपुर लौटने के बाद जुलाई 1950 से 1951 तक जयपुर नगर कार्यवाह, जुलाई 1951 से 1952 तक जयपुर जिला कार्यवाह,जुलाई 1952 से 1953 तक जयपुर विभाग कार्यवाह के दायित्वों का आपने निर्वहन किया। 1953 में दादाभाई को राजस्थान प्रांत के कार्यवाह का दायित्व मिला जो उन्होंने 1992 तक निभाया। इस कालावधि में संघकार्य का भरपूर विस्तार हुआ। 1992 में उनके

सारा विरोध समाप्त हो गया

संघ के सम्पर्क में आने के कुछ ही समय बाद दादा भाई पूरी तरह हिन्दू-संगठन के इस राष्ट्रीय कार्य में रम गये। उनके पिता श्री आनन्दी लाल जी इससे प्रसन्न नहीं थे। उनकी पूरी कोशिश रहती थी कि किसी प्रकार दादा भाई संघ से छुटकारा पा लें।

एक बार नगर के विजय-दशमी उत्सव पर दिल्ली के संघचालक लाला हरिचन्द जयपुर आये। लाला जी दिल्ली के प्रमुख उद्योगपतियों में से थे और पूरे देश में उनका नाम था। उत्सव में दादा भाई के पिताश्री को भी निमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम के बाद सबका परिचय हुआ। जब आनन्दी लाल जी की बारी आई और यह बताया गया कि दादा भाई उन्हीं के सुपुत्र हैं तो लाला हरिचन्द ने तुरंत उनके चरण स्पर्श किये। इस एक घटना से पिताश्री एकदम बदल गये और फिर उन्होंने कभी संघ का विरोध नहीं किया।

स्वास्थ्य के ढ़ीलेपन को देखकर उन्हें क्रमशः प्रांत सम्पर्क प्रमुख, क्षेत्र प्रचार प्रमुख तथा फिर क्षेत्रीय कार्यकारिणी का सदस्य बनाया गया। 1997 से 2006 तक वे **''पाथेय कण संस्थान'' के अध्यक्ष** रहे। इस सबके बीच भारती पत्रिका की ओर भी उनका पूरा ध्यान रहता था।

इस दौरान श्रीगुरु जी के 51वें जन्म दिवस पर हुए धन संग्रह, गोरक्षा हेतु हस्ताक्षर संग्रह, स्वामी विवेकानन्द एवं महर्षि अरविन्द की जन्मशती, श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन आदि जन अभियानों में दादा भाई की सक्रिय भूमिका रही। 1975 के प्रतिबंध काल में दादा भाई वेश बदलकर पूरे प्रांत में घूमते रहे। पुलिस लाख प्रयास करने पर भी उन्हें पकड़ नहीं सकी। 1990 की कार सेवा के लिए अयोध्या जाते समय उन्हें मथुरा के नरहोली थाने में 15 दिन तक बन्दी बनाकर रखा गया।

2009 में आयु के 90 वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित समारोह में संघ के सरसंघचालक श्री मोहन भागवत, उपराष्ट्रपति भैरोंसिंह शेखावत, डॉ. मुरलीमनोहर जोशी सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित हुए। इसके बाद दादा भाई की देह शिथिल होती गई और 13 मार्च 2012 को ब्रह्म मुहुर्त में उनका प्राणान्त हो गया। दादा भाई ने अपने जीवन काल में ही देह-दान का संकल्प पत्र भर दिया था। अतः उनकी देह छात्रों के उपयोग के लिये सवाई मानसिंह चिकित्सा महाविद्यालय,जयपुर को समर्पित कर दी गई।

आप तो गिरिराज हैं

सन् 1952 में संघ के द्वितीय सरसंघचालक 'श्रीगुरूजी' जयपुर के जल महल के समीप लगे प्रान्तीय शिविर में आये थे। शिविर में दादा भाई भोजन की व्यवस्था में लगे थे। भोजन के समय एक स्वयंसेवक दौड़ता हुआ आया और बोला कि श्री गुरुजी बुला रहे हैं,तुरन्त चलो। दादा भाई ने वहाँ पहुँचकर देखा कि सबके सामने भोजन की थाली लगी थी तथा गुरुजी के पास का स्थान खाली था। दादा भाई को वहीं बैठने के लिये कहा गया। दादा भाई श्रीगुरुजी के साथ बैठने में संकोच करने लगे इस पर श्रीगुरु जी ने कहा-**'' यहाँ चारों ओर गिरि-शृंखलाएं हैं (जल महल के सब ओर पहाड़ियाँ हैं) और आप गिरिराज हैं, चलो बैठो।''**

यह कहते हुए दादा भाई का हाथ पकड़ कर गुरु जी ने अपने पास बिठा लिया।

दादा भाई के प्रेरणादायी विचार

संघ कार्य को बढ़ाने में दादा भाई यशस्वी हुए क्योंकि उन्होंने डॉ. हेडगेवार जी की अपेक्षानुसार स्वयं को सिद्ध किया। डॉक्टरजी ने कहा था ग्रामों में एक प्रतिशत और शहरों में तीन प्रतिशत स्वयंसेवक बनते हैं तो संघ का उद्देश्य पूर्ण हुआ। ऐसा कहने का अर्थ है कि ये गढ़े हुए संस्कारित स्वयंसेवक अपने अपने क्षेत्र में समाज बन्धुओं का विश्वास सम्पादन कर नेतृत्व करने वाले बनें। नेतृत्व करने वाले बन्धु धर्म-वृद्ध, शील-वृद्ध, ज्ञान-वृद्ध, तपो-वृद्ध व वयो-वृद्ध बन अपने जीवन का उदाहरण समाज बन्धुओं के समक्ष रखें तो यह सम्भव है, इस अपेक्षा को मा. दादाभाई ने पूर्ण किया।

ऐसा बनने व करने के लिये दादा भाई राजस्थान के सभी स्वयंसेवकों को प्रेरित करते हुए बताते थे कि धर्म-वृद्ध बनने के लिये आदि शंकराचार्य जी को अपना आदर्श मानकर धर्म को ठीक से अपने आचरण में उतारें। 'धारयति इति धर्म' अर्थात करणीय कार्य करना धर्म है। धर्म यानि कर्तव्य, धर्म यानि स्वभाव तथा धर्म के जो दस लक्षण मनु स्मृति में बताए हैं- धैर्य, क्षमा, दमः (मनोनिग्रह), अस्तेय (चोरी न करना), शौचम (पवित्रता), इन्द्रिय निग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य तथा अक्रोध; इन गुणों से युक्त हमारा जीवन बने तो हम समाज बन्धुओं का नेतृत्व करने योग्य होंगे।

शील-वृद्ध बनने हेतु प्रभु श्री रामचन्द्र जी को आदर्श मानकर अपना जीवन व्यक्तिगत व राष्ट्रीय चरित्र युक्त हो। अपनी संघ की प्रार्थना में भी सुशील नाम का गुण हमने मांगा है जिसके द्वारा हम संघ कार्य को सर्व-व्यापी व सर्व-स्पर्शी बनाकर सम्पूर्ण विश्व को संघ कार्य अर्थात हिन्दुत्व के विचार प्रभाव में ला सकें।

ज्ञान-वृद्ध बनने के लिये मुनि शुकदेव जी (श्री वेदव्यास जी के सुपुत्र) को आदर्श मान कर हम विवेकवान बनें, सब प्रकार की परिस्थितियों में हिन्दू संगठन के कार्य को करने की प्रेरणा देते रहें। विवेकवान बनने हेतु हम स्वाध्याय करें अर्थात् स्वयं को जानें कि भारतभूमि में मेरा जन्म क्यों हुआ है तथा इस जन्म को कैसे सार्थक करूँ। स्वाध्याय से तात्पर्य है सद्साहित्य का अध्ययन कर उसे आचरण का विषय बनायें व समाज बन्धुओं को बांट कर उन्हें भी देश व समाज के प्रति अपने कर्तव्य को करने हेतु प्रेरित करें। तपो-वृद्ध बनें अर्थात् स्वयंसेवक के नाते राष्ट्र-कार्य करने के लिये स्वयंप्रेरणा से, निस्वार्थ भाव से देश व समाज कार्य करने हेतु हमारी तपस्या (नित्य की संघ स्थान पर साधना) अखण्ड चलती रहे। संघ कार्य की साधना जो अखण्ड चलने वाली विशेषतायुक्त है, वह विशेषता प्रत्येक स्वयंसेवक की बने। वयो-वृद्ध से अर्थ है कि हम समाज में वर्षों से प्राप्त संघ संस्कारों को जीवन में जीकर अपने पुराने या पर्याप्त वर्षों से स्वयंसेवक होने को प्रमाणित करें।

दादा भाई कहते थे कि अपना यह संकल्प है कि भारत माता को पुनः जगन्माता का स्थान प्राप्त करायेंगे। एक प्रकार से यह विकल्प रहित संकल्प है। इस संकल्प प्राप्ति हेतु दादा भाई ने अखण्ड, प्रचण्ड, पुरूषार्थ किया व अपने तपोपूत जीवन से हम सभी बन्धुओं को पुरुषार्थ करने की प्रेरणा दी। ■

इतिहास पुरुष ठाकुर रामसिंह

ऐसा कहा जाता है कि शस्त्र या विष से तो एक-दो लोगों की ही हत्या की जा सकती है; पर यदि किसी देश के इतिहास को बिगाड़ दिया जाये, तो लगातार कई पीढ़ियाँ नष्ट हो जाती हैं। हमारे इतिहास के साथ दुर्भाग्य से ऐसा ही हुआ। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता इस भूल को सुधारने में लगे हैं।

बाबा साहब आप्टे एवं मोरोपन्त पिंगले के बाद इस काम को आगे बढ़ाने वाले ठाकुर रामसिंह का जन्म 16 फरवरी, 1915 को ग्राम झंडवी (जिला हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश) में श्री भागसिंह एवं श्रीमती नियातु देवी के घर में हुआ था। सन् 1935 में उन्होंने राजपूत हाईस्कूल, भोरवाह से प्रथम श्रेणी में मैट्रिकुलेशन की परीक्षा तथा 1938 में डीएवी कालेज होशियारपुर से इन्टरमीडिएट परीक्षा उत्तीर्ण की। 1940 में उन्होंने लाहौर के सनातन धर्म कॉलेज से बी.ए. और क्रिश्चियन कॉलेज से इतिहास में स्वर्ण पदक के साथ एम.ए. किया। राजनीति विज्ञान एवं अंग्रेजी के इनके ज्ञान की प्रशंसा सभी प्राध्यापक करते थे। वे हॉकी के भी बहुत अच्छे खिलाड़ी थे। एम.ए. करते समय अपने मित्र बलराज मधोक के आग्रह पर वे शाखा में आये। क्रिश्चियन कॉलेज के प्राचार्य व प्रबन्धकों ने इन्हें अच्छे वेतन पर अपने यहां प्राध्यापक बनने का प्रस्ताव दिया, जिसे उन्होंने ठुकरा दिया।

ठाकुर रामसिंह

1942 में खण्डवा (म.प्र.) से संघ शिक्षा वर्ग-प्रथम वर्ष कर वे प्रचारक बन गये। उस साल लाहौर से 58 युवक प्रचारक बने थे, जिसमें से 10 ठाकुर जी के प्रयास से निकले। कांगड़ा जिले के बाद वे अमृतसर के विभाग प्रचारक रहे। विभाजन के समय हिन्दुओं की सुरक्षा और मुस्लिम गुंडों को मुंहतोड़ जवाब देने में वे अग्रणी रहे। उनके संगठन कौशल के कारण 1948 के प्रतिबन्ध काल में अमृतसर विभाग से 5,000 स्वयंसेवकों ने सत्याग्रह किया। संघ पर प्रतिबन्ध के विरुद्ध वे थोल केम्प जेल में 42 दिन भूख हड़ताल पर रहे। इस भूख हड़ताल के फलस्वरूप पंजाब के गोपीचंद भार्गव शासन का पतन होकर भीमसेन सच्चर सरकार बनी।

1949 में श्री गुरुजी ने उन्हें पूर्वोत्तर भारत भेज दिया। वहां उन्होंने अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में संघ कार्य की नींव डाली। सितम्बर 1949 से अप्रेल 1971 तक 22 वर्ष असम प्रांत के प्रथम प्रांत प्रचारक के रूप में कार्य करते हुए सभी संस्थाओं से संबंध स्थापित कर सबको एक सूत्र में पिरोने का कार्य उन्होंने अविश्रांत भाव से किया। एक दुर्घटना में उनकी एक आंख और घुटने में भारी चोट आयी, जो जीवन भर ठीक नहीं हुई। 1962 में चीन के सैनिकों के असम में घुसने की आशंका से लोगों में भगदड़ मच गयी। गैर-असमी लोग असम से भागकर देश के अन्य सुरक्षित स्थानों पर जा रहे थे। उस समय ठाकुर जी न केवल डटे रहे बल्कि वरिष्ठ प्रचारक एकनाथ रानाडे के साथ मिलकर चीनियों के असम पर अधिकार कर लेने की स्थिति में स्वयंसेवकों को लेकर उनसे मुकाबला करने की रणनीति बनाने में व्यस्त थे। योजनानुसार उन्होंने पूरे प्रान्त और विशेषकर तेजपुर जिले के स्वयंसेवकों को नगर और गांवों में डटे रहकर प्रशासन का सहयोग करने को कहा। इससे जनता का मनोबल बढ़ा, अफवाहें शान्त हुईं और वातावरण ठीक हो गया। उन्हें असमिया भाषा लिखना और बोलना अच्छी तरह से आता था। उनके स्नेहपूर्ण व्यवहार व सम्पर्क से असम के 50 से अधिक प्रचारक निकले।

1971 में वे पंजाब के सहप्रान्त प्रचारक, 1974 में प्रांत प्रचारक, 1978 में सहक्षेत्र प्रचारक और फिर क्षेत्र प्रचारक बने। इस दौरान उन्होंने दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल और जम्मू-कश्मीर का व्यापक प्रवास किया।

उन्हें अपनी रॉयल एनफील्ड मोटरसाइकिल पर बहुत भरोसा था। सैकड़ों कि.मी. की यात्रा वे इसी से कर लेते थे। बुलन्द आवाज के धनी ठाकुर जी ने इस क्षेत्र से लगभग 100 युवकों को प्रचारक बनाया।

आपातकाल में ठाकुर रामसिंह का केन्द्र दिल्ली था। उन्होंने भूमिगत रहते हुए आंदोलन के साथ ही जेल गये स्वयंसेवक परिवारों को भी संभाला। इस दौरान उन्होंने न अपना वेष बदला और न मोटरसाइकिल। फिर भी पुलिस उन्हें पकड़ नहीं सकी। 1984 से वे 'अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना' के काम में लग गये। 1991 में वे इसके अध्यक्ष बने।

2002 में स्वास्थ्य के कारण उन्होंने जिम्मेदारी छोड़ दी; पर वे नये कार्यकर्ताओं को प्रेरणा देते रहे। उनके प्रयास से सरस्वती नदी, आर्य आक्रमण, सिकंदर की विजय जैसे विषयों पर हुए शोध ने विदेशी और वामपंथी इतिहासकारों को झूठा सिद्ध कर दिया।

2006 में हमीरपुर जिले के ग्राम नेरी में 'ठाकुर जगदेवचंद स्मृति इतिहास शोध संस्थान' की स्थापना कर वे भारतीय इतिहास के पुनर्लेखन की साधना में लग गये। 94 वर्ष की अवस्था तक वे अकेले प्रवास करते थे। कमर झुकने पर भी उन्होंने चलने में कभी छड़ी या किसी व्यक्ति का सहयोग नहीं लिया।

छह सितम्बर, 2010 को लुधियाना में संघ के वयोवृद्ध प्रचारक एवं भारतीय इतिहास के इस पुरोधा का देहांत हुआ। उनकी इच्छानुसार उनका दाह संस्कार उनके गांव में ही किया गया। ■

अनाथ बंधु एवं मृगेन्द्र दत्त का बलिदान

योद्धाओं जैसी वीर गति पाने वाले क्रांतिवीर अनाथ बंधु पंजा और मृगेन्द्र दत्त के नामों को अंग्रेजों के चाटुकार और वामपंथी इतिहासकारों ने भारत के स्वतन्त्रता सेनानियों की सूची से बाहर रखा। वास्तव में बेहद कम उम्र में अंग्रेजी साम्राज्य की चूलें हिला देने वाले क्रांतिकारियों के नाम भारतीय इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखे जाने चाहिए थे, इनका जीवन परिचय जन-जन तक पहुँचाया जाना चाहिए था। लेकिन स्वतंत्र भारत की सरकारों ने अपने परिवार तथा पार्टी को ही स्वतंत्रता प्राप्ति का सारा श्रेय दिया। देश के लिए आत्म बलिदानी दो क्रांतिकारियों की कथा प्रस्तुत है, जिनके बलिदान से अंग्रेज शासकों को अपना निर्णय बदलने के लिए विवश होना पड़ा।

उन दिनों बंगाल के मिदनापुर जिले में क्रान्तिकारी गतिविधियाँ जोरों पर थीं। इससे परेशान होकर अंग्रेजों ने वहाँ जेम्स पेड्डी को जिलाधिकारी बनाकर भेजा। वह बहुत क्रूर अधिकारी था। छोटी सी बात पर 10-12 साल की सजा दे देता था। क्रान्तिकारियों ने शासन को चेतावनी दी कि वे इसके बदले किसी भारतीय को यहाँ भेजें; पर शासन तो बहरा था। अतः एक दिन जेम्स पेड्डी को गोली से उड़ा दिया गया।

अंग्रेज इससे बौखला गये। अब उन्होंने पेड्डी से भी अधिक कठोर राबर्ट डगलस को भेजा। एक दिन जब वह अपने कार्यालय में बैठा फाइलें देख रहा था, दो युवक आये और उसे गोली मार दी। वह वहीं ढेर हो गया। दोनों में से एक युवक तो भाग गया; पर दूसरा प्रद्योत कुमार पकड़ा गया। शासन ने उसे फाँसी दे दी।

दो जिलाधिकारियों की हत्या के बाद भी अंग्रेजों की आँख नहीं खुली। अबकी बार उन्होंने बी.ई.जे.बर्ग को भेजा। बर्ग सदा दो अंगरक्षकों के साथ चलता था। इधर क्रान्तिवीरों ने भी ठान लिया था कि इस जिले में किसी अंग्रेज जिलाधिकारी को नहीं रहने देंगे।

बर्ग फुटबाल का शौकीन था और टाउन क्लब की ओर से खेलता था। 2 सितम्बर, 1933 को टाउन क्लब और मौहम्मदन स्पोर्टिंग के बीच मुकाबला था। खेल शुरू होने से कुछ देर पहले बर्ग आया और अभ्यास में शामिल हो गया। अभी बर्ग ने शरीर गरम करने के लिए फुटबाल में दो-चार किक ही मारी थी कि उसके सामने दो खिलाड़ी, अनाथ बंधु पंजा और मृगेन्द्र कुमार दत्त आकर खड़े हो गये। दोनों ने जेब में से पिस्तौल निकालकर बर्ग पर खाली कर दीं। वह हाय कहकर धरती पर गिर पड़ा और वहीं मर गया।

यह देखकर बर्ग के अंगरक्षक इन पर गोलियाँ बरसाने लगे। इनकी पिस्तौल तो खाली हो चुकी थी, अतः जान बचाने के लिए दोनों दौड़ने लगे; पर अंगरक्षकों के पास अच्छे शस्त्र थे। दोनों मित्र गोली खाकर गिर पड़े। अनाथ बन्धु ने तो वहीं प्राण त्याग दिये। मृगेन्द्र को पकड़ कर अस्पताल ले जाया गया। अत्यधिक खून निकल जाने के कारण अगले दिन वह भी चल बसा।

इस घटना के बाद पुलिस ने मैदान को घेर लिया। हर खिलाड़ी की तलाशी ली गयी। निर्मल जीवन घोष, ब्रजकिशोर चक्रवर्ती और रामकृष्ण राय के पास भी भरी हुई पिस्तौलें मिलीं। ये तीनों भी क्रान्तिकारी दल के सदस्य थे। यदि किसी कारण से अनाथ बन्धु और मृगेन्द्र को सफलता न मिलती, तो इन्हें बर्ग का वध करना था। पुलिस ने इन तीनों को पकड़ लिया और मुकदमा चलाकर मिदनापुर के केन्द्रीय कारागार में फाँसी पर चढ़ा दिया।

तीन जिलाधिकारियों की हत्या के बाद अंग्रेजों ने निर्णय किया कि अब कोई भारतीय अधिकारी ही मिदनापुर भेजा जाये। अंग्रेज अधिकारियों के मन में भी भय समा गया था, कोई वहाँ जाने को तैयार नहीं हो रहा था। इस प्रकार क्रान्तिकारी युवकों ने अपने बलिदान से अंग्रेज शासन को झुका दिया। ■

जन्म दिवस पर शत-शत नमन

जन्मजात वास्तुकार
सबके हित चिंतक प्रचारक
केशव नरहरि गोरे
1 सितम्बर

(1915-2001)

विश्व हिन्दू परिषद के
आदर्श कार्यकर्ता
रामेश्वर दयाल
2 सितम्बर

(1927-2010)

भूतपूर्व राष्ट्रपति,प्रख्यात
शिक्षाविद, महान दार्शनिक
डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन
5 सितम्बर

(1888-1975)

रा.स्वं.संघ के वरिष्ठ प्रचारक
अ.भा.सहबौद्धिक प्रमुख रहे
कौशल किशोर
14 सितम्बर

(1928-2003)

क्या बेंगलुरु की हिंसा प्रयोजित थी?

ऐसे तथ्य सामने आए हैं जिनसे यह माना जा रहा है कि बेंगलुरु की हिंसा (11 अगस्त) प्रायोजित थी। वहां के केजी हल्ली और डीजे हल्ली थाने में जो हुआ वह अराजकता की पराकाष्ठा थी। हिंसा और अराजकता की ऐसी बदरंग तस्वीरों के सुर्खियाँ बटोरने के बावजूद अनेक बुद्धिजीवियों और साहित्यकारों का इस पर मौन साध जाना पाखंड से भरा दोहरा आचरण है।

मुस्लिम समुदाय को यह समझना होगा कि तुष्टिकरण की इन भयावह प्रवृत्तियों का सर्वाधिक नुक़सान उन्हें ही उठाना पड़ा है। धर्मांधता की अफ़ीम खिलाकर उन्हें ग़रीबी एवं बेरोज़गारी की अंधी सुरंग में भटकने के लिए छोड़ दिया जाता है।

किसी भी सभ्य समाज में मार-काट, उपद्रव, हिंसा, आगज़नी, अराजकता आदि के लिए कोई जगह नहीं होती। ऐसी दुष्प्रवृत्तियों को कदापि स्वीकार नहीं किया जा सकता। और भारत जैसे लोकतांत्रिक एवं सर्वसमावेशी देश में तो इसके लिए किंचित मात्र भी स्थान नहीं। भारत तो संवाद, सहयोग, सहजीविता का दूसरा नाम है।

किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में जन-मन की भावनाओं-आकांक्षाओं, सहमति-विरोध को प्रकट करने के अनेकानेक वैध स्वरूप और माध्यम होते हैं। उसमें असहमति, आलोचना, अहिंसक आंदोलन आदि के लिए भी पर्याप्त स्थान होता है। परंतु मार-काट, लूट-खसोट, हिंसा, आगज़नी और रक्तपात, चाहे वह किसी भी कारण या उद्देश्य से किया गया हो- असभ्य और अमानुषिक आचरण ही कहलाएगा। ऐसी घटनाएँ मनुष्यता को शर्मसार करती हैं। पहले दिल्ली और अब बेंगलुरु में हुई हिंसा एवं आगज़नी ने हमें यह सोचने पर विवश कर दिया है कि क्या हमारे समाज का एक वर्ग शताब्दियों पूर्व की क़बीलाई मानसिकता का परित्याग कर पाया है?

धर्म और आस्था को ठेस पहुँचाना बुरा है। पर आए दिन मज़हबी मान्यता के आहत होने के नाम पर सैकड़ों गाड़ियों को आग के हवाले कर देना, दुकानों और घरों में तोड़-फोड़ करना, पुलिस-प्रशासन पर हमला कर देना, सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुँचाना- क्या सभ्य एवं लोकतांत्रिक आचरण है? क्या इसे किसी भी सूरत में जायज़ ठहराया जा सकता है? क्या ज़िंदा लोगों के जान-माल से अधिक मूल्यवान-महत्त्वपूर्ण कुछ और हो सकता है? श्रद्धा और आस्था को इस देश से बेहतर क्या कोई और देश भी समझ सकता है? क्या व्यक्ति विशेष के कुकृत्य का प्रतिशोध संपूर्ण समाज, पुलिस-प्रशासन, व्यवस्था से लिया जा सकता है?

बात निकलेगी तो फिर दूर तक जाएगी। सवाल यह भी कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की दुहाई देने वाले क्या केवल कुछ चुनिंदा मुद्दों या समुदायों तक इसे सीमित रखना चाहते हैं? क्या लोकतंत्र में किसी को यह छूट दी जा सकती है कि वह पुलिस-प्रशासन से लेकर पूरे-के-पूरे शहर को बंधक बना ले? बेंगलुरु के केजी हल्ली और डीजे हल्ली थाने में जो हुआ वह अराजकता की पराकाष्ठा थी। हिंसा और अराजकता की ऐसी बदरंग तस्वीरों के सुर्खियाँ बटोरने के बावजूद तमाम बुद्धिजीवियों और साहित्यकारों का इस पर मौन साध जाना पाखंड से भरा दोहरा आचरण है। आए दिन असहिष्णुता का राग अलापने वाले लोग ऐसे हिंसक दृश्यों में समुदाय-विशेष की एकपक्षीय संलिप्तता देखकर प्रायः मौन साध जाते हैं।क्या यह उपद्रवियों एवं दंगाइयों के मनोबल को बढ़ाना नहीं है? क्या यह उनके कुकृत्यों को मौन सहमति प्रदान करना नहीं है? क्या उन्हें निष्पक्ष एवं एकजुट होकर ऐसी घटनाओं का पुरजोर विरोध एवं निर्द्वन्द्व निंदा नहीं करनी चाहिए?

अराजकता के व्याकरण में विश्वास रखने वाला समूह चेहरा और वेष बदल-बदलकर देश को लहूलुहान कर रहा है और कथित धर्मनिरपेक्ष धड़ा चुप है। कभी दिल्ली, कभी कानपुर, कभी केरल तो कभी बेंगलुरु। स्थान अलग-अलग, पर हिंसा एवं उपद्रव की प्रवृत्ति, प्रकृति और पृष्ठभूमि एक जैसी।शाहीनबाग, जामिया, अलीगढ़, कानपुर, केरल या बेंगलुरु में हुई हिंसा-आगजनी किसी सुनियोजित साज़िश की ओर इशारा करती है। महज़ चंद घण्टों में बमों-असलहों-पत्थरों से लैस भारी भीड़ का जुटना बिना पूर्व तैयारी और व्यापक नेटवर्क के संभव नहीं। यह एक प्रभावी, परिणामदायी एवं दंगों पर अंकुश लगाने वाला क़दम है कि पहले उत्तरप्रदेश और अब कर्नाटक सरकार इन दंगाइयों-बलवाइयों की संपत्ति ज़ब्त कर दंगे और आगज़नी से हुए आर्थिक नुक़सान की भरपाई करना चाह रही है। सरकार को बिना किसी दबाव में आए ऐसे दंगाइयों एवं अविलंब वसूलना चाहिए। इतना ही नहीं दंगा एवं हिंसा में संलिप्त संगठनों पर त्वरित प्रतिबंध भी एक ठोस उपचार सिद्ध होगा।

विदित हो कि इन सभी घटनाओं में बार-बार इस्लामिक संगठन पीएफआई और उसके राजनीतिक चेहरे एसडीपीआई का नाम आ रहा है। केवल इतना ही नहीं इन दोनों संगठनों को सहयोग देने वालों का जाल भी देश-विदेश तक फैला हुआ है।

इसमें राजनेताओं एवं रसूखदारों की संलिप्तता →

आगामी पक्ष (16-30 सितम्बर 2020) के विशेष अवसर

आश्विन कृष्ण 14 से आश्विन (अधिक) शुक्ल 14

जन्म दिवस

17 सितम्बर (1892)– हनुमान प्रसाद पोद्दार की जयन्ती

19 सितम्बर (1932)– भारतमाता मंदिर के संस्थापक स्वामी सत्यमित्रानन्द की जयन्ती

20 सितम्बर (1911)– आचार्य श्री राम शर्मा की जयन्ती

24 सितम्बर (1861)– मैडम भीकाजी कामा की जयन्ती

24 सित. (1916)– जनसेवक बच्छराज व्यास की जयन्ती

25 सितम्बर (1933)– केरल में हिंदू ऐक्य वेदी के संस्थापक स्वामी सत्यानन्द सरस्वती की जयन्ती

25 सितम्बर (1916)– पं. दीनदयाल उपाध्याय की जयन्ती

26 सितम्बर (1820)– ईश्वर चन्द्र विद्यासागर की जयंती

27 सितम्बर (1926)– श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति आन्दोलन के पुरोधा अशोक सिंहल की जयन्ती

27 सितम्बर (1953)– मां अमृतानन्दमयी का जन्म दिवस

28 सितम्बर (1893)– हिन्दी के अनन्य सेवक श्री नारायण चतुर्वेदी की जयन्ती

28 सितम्बर (1929)– भारत रत्न लता मंगेशकर का जन्मदिवस

बलिदान दिवस/पुण्यतिथि

17 सित. (1917)– विश्व का पहला विमान 'मारुत सखा' बनाने वाले शिवकर बापूजी तलपदे की पुण्यतिथि

17 सितम्बर (1860)– लाला जयदयाल, मेहराब खान को कोटा में फांसी

19 सितम्बर (1726)– खण्डो बल्लाल की पुण्यतिथि

21 सित.(2003)– वरिष्ठ प्रचारक मोरोपंतजी पिंगले की पुण्यतिथि

29 सितम्बर (1942)– मातंगिनी हाजरा की शहादत

30 सितम्बर (1915)– सूफी अम्बा प्रसाद का बलिदान

30 सित. (1962)– गोभक्त लाला हरदेव सहाय की पुण्यतिथि

30 सितम्बर (1978)– संघ समर्पित माधवराव मुले की पुण्यतिथि

अन्य

17 सितम्बर– विश्वकर्मा जयन्ती

18 सितम्बर (1947)– हैदराबाद राज्य का भारत में विलय

23 सितम्बर (1918) – हैफा दिवस

→ को भी स्वतंत्र जाँच का विषय बनाना चाहिए।

सनद रहे कि पीएफआई वही संगठन है जो शाहीनबाग के प्रदर्शनकारियों को फंडिंग कर रहा था। उस समय लगभग 15 प्रदर्शनकारियों के खातों में 1 करोड़ से अधिक की राशि इसी संगठन के द्वारा जमा कराई गई थी। पुलिस की छानबीन से यह तथ्य सामने आया है कि नागरिकता कानून के विरोध के नाम पर इस संगठन ने देश भर में हिंसक दंगे कराने की साज़िश रची थी।

उत्तरप्रदेश समेत देश के सात राज्यों में यह संगठन लगभग 2009 से ही सक्रिय है। इसके कई पदाधिकारी पूर्व में सिमी जैसे प्रतिबंधित कट्टरपंथी संगठन के सदस्य रह चुके हैं। बल्कि एनआइए की रिपोर्ट के अनुसार इस संगठन की आतंकवादी घटनाओं में भी संदिग्ध भूमिका रही है। इसने घोषित रूप से स्वयं को ग़रीबों-पिछड़ों के लिए काम करने वाला संगठन तो बताया है, पर इसका असली मक़सद धर्मांतरण एवं धार्मिक कट्टरता को बढ़ावा देना रहा है।

परंतु इससे भी आश्चर्यजनक यह है कि इन दोनों संगठनों और इनकी देश-विरोधी गतिविधियों पर अधिकांश राजनीतिक दलों ने मौन साध रखा है। हद तो यह है कि दलितों के हितों की पैरोकारी का दावा करने वाले तमाम राजनीतिक दल बेंगलुरु-हिंसा पर अपना मुँह तक खोलने को तैयार नहीं। एक दलित विधायक के आवास पर उपद्रवियों-दंगाइयों द्वारा किए गए तोड़-फोड़ एवं आगज़नी का सामान्य विरोध करने तक का वे साहस नहीं जुटा पाए। इसे ही कहते हैं घोर तुष्टिकरण की राजनीति।

विरोध तो दूर, पीएफआई जैसे कट्टर इस्लामिक संगठन का केस दिग्गज़ काँग्रेसी नेता कपिल सिब्बल लड़ते रहे हैं। हामिद अंसारी इस संगठन के सार्वजनिक जलसे में शिरकत कर चुके हैं। आप के तमाम नेताओं का पीएफआई से प्रत्यक्ष-परोक्ष संबंध उजागर हो चुका है। वोट-बैंक की ख़ातिर आख़िर कब तक देश को सांप्रदायिकता और दंगे की आग में झोंकने का षड्यंत्र चलता रहेगा? जैसे काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ाई जा सकती वैसे ही तुष्टिकरण की फ़सल भी बार-बार नहीं काटी जा सकती। तुष्टिकरण की विभाजनकारी राजनीति पर अविलंब विराम अत्यावश्यक है।

मुस्लिम समुदाय को यह समझना होगा कि तुष्टिकरण की इन भयावह प्रवृत्तियों का सर्वाधिक नुक़सान उन्हें ही उठाना पड़ा है। कट्टरता की अफ़ीम खिलाकर उन्हें ग़रीबी एवं बेरोज़गारी की अंधी सुरंग में भटकने के लिए छोड़ दिया जाता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि कोई भी समुदाय भीड़ की तरह सोचना छोड़कर जागरूक मतदाता वर्ग की तरह सोचे और जिम्मेदार नागरिक की भाँति देश के विकास में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करे। क़ानून और संविधान को अपना काम करने देना चाहिए और समाज के सभी वर्गों-समुदायों को एकजुट होकर राष्ट्रीय विकास एवं सौहार्द्र में अपना योगदान देना चाहिए। यही बदलते भारत की मुकम्मल एवं सच्ची तस्वीर होगी।

-प्रणय कुमार

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार
74वाँ स्वतंत्रता दिवस
सभी देशवासियों को
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामन
जय हिंद
15 अगस्त का दिन देश की आजादी के पुरोधाओं को, उनके त्याग, तप और बलिदान को नमन करने का दिन होता है। यह उनके जज़्बे और उनकी भारत-भक्ति से प्रेरणा लेकर माँ भारती के लिए समर्पित होकर काम करने और संकल्प लेने का दिन भी है।
- नरेन्द्र मोदी
davp 22201/13/0015/2021
लाल किले की प्राचीर से स्वतंत्रता दिवस समारोह

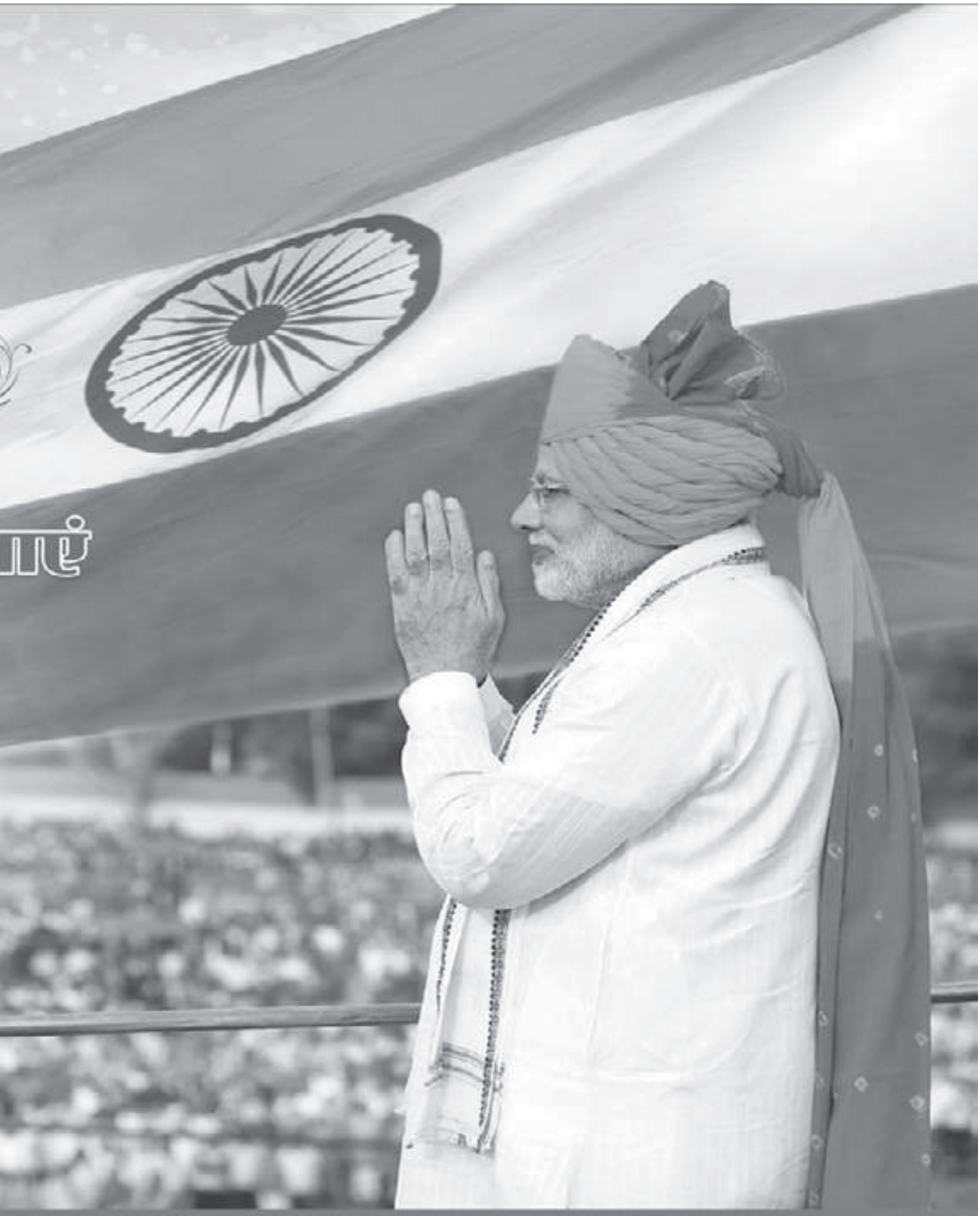

का प्रातः 6:25 बजे से दूरदर्शन द्वारा सीधा प्रसारण

तेजस्वी बालक

स्वामी विवेकानंदजी को बचपन में सब लोग बिले नाम से पुकारते थे। बाद में नरेन्द्रनाथ दत्त कहलाए। नरेन्द्रनाथ बहुत उत्साही और तेजस्वी बालक थे। इस बालक को बचपन से ही संगीत, खेलकूद और मैदानी गतिविधियों में रुचि थी।

नरेन्द्रनाथ बचपन से ही आध्यात्मिक प्रकृति के भी थे और वे खेल-खेल में राम, सीता, शिव आदि मूर्तियों की पूजा करने में रम जाते थे। इनकी मां इन्हें हमेशा रामायण व महाभारत की कहानियां सुनाती थीं जिसे नरेन्द्रनाथ खूब चाव से सुनते थे।

एक बार बनारस में स्वामी विवेकानन्द जी मां दुर्गा जी के मंदिर से निकल रहे थे कि तभी वहां पहले से मौजूद बहुत सारे बंदरों ने उन्हें घेर लिया। वे उनसे प्रसाद छीनने के लिए उनके नजदीक आने लगे। उन्हें अपनी तरफ आते देख कर स्वामीजी बहुत भयभीत हो गए। खुद को बचाने के लिए भागने लगे। पर वे बंदर तो पीछा छोड़ने को तैयार ही नहीं थे।

पास में खड़ा एक वृद्ध संन्यासी यह सब देख रहा था, उन्होंने स्वामी जी को रोका और कहा रुको! डरो मत, उनका सामना करो और देखो कि क्या होता है।

वृद्ध संन्यासी की बात सुनकर स्वामी जी में हिम्मत आ गई और तुरंत पलटे और बंदरों की तरफ बढ़ने लगे। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उनके सामना करने पर सभी बंदर भाग खड़े हुए।

इस सलाह के लिए स्वामी जी ने वृद्ध संन्यासी को बहुत धन्यवाद दिया। इस घटना से स्वामीजी को एक गंभीर शिक्षा मिली और कई सालों बाद उन्होंने एक सभा में इस घटना का जिक्र किया और कहा, **यदि तुम कभी किसी चीज से भयभीत हो, तो उससे भागो मत, पलटो और सामना करो।** वास्तव में, यदि हम अपने जीवन में आई समस्याओं का सामना करें तो यकीन मानिए बहुत सी समस्याओं का समाधान तो अपने आप ही हो जाएगा। ■

बाल प्रश्नोत्तरी

बाल मित्रों! यह प्रश्नोत्तरी पाथेय कण के 16 जुलाई के अंक पर आधारित है। उक्त अंक को आप पढ़ेंगे तो नीचे दिये गये सभी प्रश्नों के उत्तर बड़ी सरलता से दे सकेंगे।

1. श्रावण मास में किस भगवान की आराधना विशेष फलदायी मानी जाती है?
(क) ब्रह्मा (ख) विष्णु (ग) शिव (घ) इन्द्र

2. प्रतापी राजा मार्तण्ड वर्मा ने किस यूरोपीय कम्पनी की नौ सेना को धूल चटाई?
(क) ब्रिटिश (ख) डच (ग) पुर्तगाली (घ) फ्रांसीसी

3. राजा मार्तण्ड वर्मा तथा यूरोपीय नौसेना के बीचे निर्णायक युद्ध कहाँ हुआ?
(क) कोलाचेल (ख) कोल्लम (ग) कयमकुलम (घ) कोटाराकारा

4. कोचीन बंदगाह से 17 वीं सदी में प्रमुख निर्यात क्या था?
(क) हथियार (ख) रबर (ग) कपड़े (घ) काली मिर्च

5. राजा मार्तण्ड वर्मा ने अपनी सारी सम्पत्ति किस मंदिर को दान कर दी थी?
(क) पद्मनाभस्वामी (ख) शबरीमला (ग) गुरुवायुर (घ) थिरुनेल्ली

6. महर्षि याज्ञवल्क्य की पत्नी जिसने आत्मज्ञान के लिए सांसारिक धन-सम्पत्ति अस्वीकार की?
(क) कात्यायनी (ख) मैत्रेयी (ग) सूर्या (घ) सावित्री

7. श्रीकृष्णचंद्र भार्गव (भैयाजी) लम्बे समय तक (19वर्ष) किस विभाग के प्रचारक रहे?
(क) अजमेर (ख) बीकानेर (ग) जोधपुर (घ) नागौर

8. साहसी व दिलेर प्रचारक सूर्य प्रकाश जी के कार्य का प्रमुख केन्द्र था?
(क) दिल्ली (ख) जयपुर (ग) जोधपुर (घ) कोटा

9. क्रांतिकारियों के बीच 'रणजीत' नाम से किसे पुकारा जाता था?
(क) भगत सिंह (ख) चन्द्रशेखर आजाद (ग) राजगुरु (घ) जयदेव

10. ईश्वर चंद्र विद्यासागर से एक पैसा मांगने वाले लड़के को उन्होंने क्या दिया?
(क) एक पैसा (ख) एक आना (ग) चार आने (घ) एक रुपया

(उत्तर इसी अंक में हैं)

पहचानो तो यह महापुरुष कौन है ?

बाल मित्रों! यहाँ एक महापुरुष का चित्र तथा उनके जीवन के बारे में कुछ संकेत दिये जा रहे हैं। संकेत के आधार पर चित्र को पहचानो और अपने ज्ञान की परीक्षा करो।

- आपने अमरीका में प्रवासी भारतीयों के बीच देशभक्ति की भावना जागृत की
- अमरीका में जाकर गदर पार्टी की स्थापना की।
- लाहौर में पढ़ते समय आपने 'यंग मैन इंडिया एसोसिएशन' की स्थापना की।

(उत्तर इसी अंक में हैं)

गिलोय बढ़ाती है रोग प्रतिरोधक क्षमता

गिलोय एक ही ऐसी बेल है, जिसे आप सौ मर्ज की एक दवा कह सकते हैं। गिलोय व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती है। इसमें भरपूर मात्रा में एंटीऑक्सीडेंट्स होते हैं, जो शरीर में से विषैले पदार्थों को बाहर निकालने का काम करते हैं। यह रक्त बिंबाणु (प्लेटलेट्स) बढ़ाने तथा मोटापा कम करने में सहायक है। आइए जानते हैं गिलोय के फायदे

बुखार– अगर किसी को बार–बार बुखार आता है तो उसे गिलोय के काढ़े का सेवन करना चाहिए। डेंगू के मरीजों को भी गिलोय के सेवन की सलाह दी जाती है। डेंगू के अलावा मलेरिया, स्वाइन फ्लू में आने वाले बुखार से भी गिलोय छुटकारा दिलाती है।

गिलोय का काढ़ा बनाने के लिए चार इंच लंबी गिलोय की डंडी को छोटा–छोटा काट लें। इन्हें कूट कर एक कप पानी में उबाल लें। पानी आधा होने पर इसे छान कर पीएं। अधिक फायदे के लिए आप इसमें लौंग, अदरक, तुलसी भी डाल सकते हैं।

मधुमेह– गिलोय जूस खून में शर्करा की मात्रा को कम करती है जिसका फायदा टाइप टू डायबिटीज के मरीजों को होता है।

गिलोय जूस के लिए गिलोय की डंडियों को छील लें और इसमें पानी मिलाकर मिक्सी में अच्छी तरह पीस लें। छान कर सुबह–सुबह खाली पेट पीएं।

पाचन शक्ति– यह बेल पाचन तंत्र के सारे कामों को भली–भांति संचालित करने और भोजन के पचने की प्रक्रिया में मदद करती है। इससे व्यक्ति कब्ज और पेट की दूसरी गड़बड़ियों से बचा रहता है।

तनाव– गलाकाट प्रतिस्पर्धा के इस दौर में तनाव या स्ट्रेस एक बड़ी समस्या बन चुका है। गिलोय एडप्टोजन की तरह काम करती है और मानसिक तनाव और चिंता–घबराहट (एंग्जायटी) के स्तर को कम करती है।

अस्थमा– मौसम के परिवर्तन पर खासकर सर्दियों में अस्थमा के मरीजों को काफी परेशानी होती है। ऐसे में अस्थमा के मरीजों को नियमित रूप से गिलोय की मोटी डंडी चबानी चाहिए या उसका जूस पीना चाहिए।

गठिया– गिलोय में एंटी आर्थराइटिक गुण होते हैं, जिसकी वजह से यह जोड़ों के दर्द सहित गठिया के कई लक्षणों में फायदा पहुंचाती है।

अरंडी यानी कैस्टर के तेल के साथ गिलोय मिलाकर लगाने से गाउट(जोड़ों का गठिया) की समस्या में आराम मिलता है। इसे अदरक के साथ मिला कर लेने से रूमेटाइड आर्थराइटिस की समस्या से लड़ा जा सकता है।

एनीमिया–भारतीय महिलाएं अक्सर एनीमिया यानी खून की कमी से पीड़ित रहती हैं। इससे उन्हें हर वक्त थकान और कमजोरी महसूस होती है। गिलोय के सेवन से शरीर में लाल रक्त कणिकाओं की संख्या बढ़ जाती है और एनीमिया से छुटकारा मिलता है।

गिलाये की छः इंच की डंडी को जमीन में लगाने पर भी वह बेल बन जाती है। इसे किसी पेड़ (नीम पेड़ को प्राथमिकता) के साथ लगाने से यह बेल उस पर चढ़ जाती है। ■

जन्म शताब्दी वर्ष (१९२०–२०२०) पर विशेष

महान् विचारक

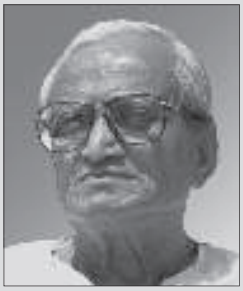

श्री दत्तोपंत जी ठेंगड़ी जन्म शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत दिये जा रहे प्रसंगों की श्रृंखला में इस बार प्रस्तुत है विश्व हिन्दू परिषद के पुरोधा अशोक सिंहल का अनुभव कथन –

देश भर में स्वामी विवेकानन्द जी की जन्म शताब्दी मनाई जा रही थी। कानपुर में उस समय वहाँ के आयुध कारखाने के श्री एस.एन. बनर्जी कम्युनिस्ट पार्टी से सांसद थे। आयुध कारखाने के सभी मजदूर कम्युनिस्ट संगठन से ऐसे बंधे हुए थे कि वहाँ किसी अन्य संगठन तथा एक मजदूर नेता के नाते कम्युनिस्ट पार्टी छोड़कर किसी का भी प्रवेश सम्भव नहीं था।

उसी परिसर में एक महाविद्यालय के प्राचार्य ने विवेकानन्द शताब्दी महोत्सव के लिये आयुध कारखाने में काम करने वाले कुछ प्रमुख बंगाली और वहाँ के अधिकारियों को लेकर विवेकानन्द शताब्दी समारोह मनाने का निर्णय किया। ये प्राचार्य महोदय संघ के स्वयंसेवक थे। वहाँ की फैक्टरी के अधिकारियों से भी उनके संबंध अच्छे थे। बहुत बड़ी संख्या में फैक्टरी के लोग उस समारोह में सम्मिलित हुये। उस समारोह के प्रधान वक्ता श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी का भाषण जब पूर्ण हो गया, उसी के बाद एस.एन. बनर्जी के लोगों को कार्यक्रम की जानकारी लग सकी। उस समारोह में विवेकानन्द के संबंध में सबसे प्रभावी भाषण जिनका हुआ वे भारतीय मजदूर संघ के जनक श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी थे।

कार्यक्रम के समापन के बाद कम्युनिस्ट केवल हाथ मलते रह गये। वे कुछ कर नहीं सके और ठेंगड़ी जी ने आयुध कारखाने के कर्मचारी और अफसरों का दिल जीत लिया। इस प्रकार कानपुर में ठेंगड़ी जी के द्वारा वहाँ के आयुध कारखानों के मजदूरों और अफसरों के बीच भारतीय मजदूर संघ का प्रवेश हुआ।

यहीं से भारतीय मजदूर संघ का कार्य कानपुर में खड़ा हुआ। ■

जहाँ देशहित की बात हो वहां सरकार और जन-प्रतिनिधियों पर डालें दबाव- होसबोले

लोकतांत्रिक देश में राष्ट्रहित और जनहित से जुड़े विषयों पर सरकारों के सामने आवाज उठानी चाहिये। जनप्रतिनिधि, अगर जन हितों को लेकर उदासीन हैं तो उन पर भी दबाव की ताकत का प्रयोग करना चाहिये।

उपरोक्त विचार संघ के सह सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबोले ने गत 15 अगस्त को ''दत्तोपंत जी ठेंगड़ी जन्म शताब्दी व्याख्यान माला'' के तहत भारतीय मजदूर संघ (भामसं) द्वारा आयोजित कार्यक्रम के अंतिम सत्र में पदाधिकारियों के सवालों के जवाब देते हुए व्यक्त किये। उन्होंने कहा, कोई भी सरकार हो, चाहे वह भाजपा हो या कांग्रेस की, सभी सरकारें एक दायरे में काम करती हैं। सरकारों को इस दायरे से बाहर लाने के लिये जन संगठन, मीडिया, अदालत कई मार्ग हैं, जिनका उपयोग किया जाना चाहिये। कब और कौन सी चीज का उपयोग करना है, यह अपने विवेक पर निर्भर करता है। विजडम(बुद्धिमत्ता) और स्ट्रेटेजी (रणनीति) बहुत महत्वपूर्ण है। ताकत है तो चुप नहीं रहना है, लेकिन ताकत का दुरुपयोग भी नहीं करना है। अंतिम अस्त्र का पहले ही दिन प्रयोग नहीं करना चाहिये। लोकतंत्र में संवाद ही सबसे बड़ा अस्त्र है। उन्होंने भामसं के पदाधिकारियों को सचेत भी किया कि वे संगठन की ताकत का इस्तेमाल हमेशा सत्य और जनहित में करें।

विश्व हिन्दू परिषद ने 5000 दलित बन्धुओं को बनाया मंदिरों का पुजारी

देश में जातीय भेदभाव मिटाने की दिशा में विश्व हिंदू परिषद सराहनीय काम कर रही है। देश में पांच हजार दलित बन्धुओं को मंदिरों का पुजारी बनाने का पुनीत कार्य विहिप ने किया है। विहिप की लगातार कोशिशों से ज्यादातर पुजारी सरकारी देखरेख में संचालित मंदिरों के पैनल में भी शामिल हुए हैं। विहिप का कहना है कि सामाजिक समरसता की दिशा में यह अभियान निरन्तर चल रहा है। हिन्दू मित्र परिवार योजना और 'एक कुंआ एक श्मशान- तभी बनेगा भारत महान' की योजना पर भी काम हो रहा है।

इस अभियान में सिर्फ तमिलनाडु में ही ढाई हजार दलित बंधु पुजारी बने हैं, जबकि आंध्र प्रदेश के मंदिरों में भी इनकी संख्या अच्छी खासी है। धर्मकर्म में रूचि रखने वाले बन्धुओं को पूरे विधि-विधान से पूजन-अर्चन करने की पद्वति सिखाई जाती है। धार्मिक कार्यों के संचालन की दीक्षा सफलतापूर्वक प्राप्त करने के बाद इन पुजारियों को आंध्र प्रदेश स्थित तिरुपति बालाजी मंदिर की ओर से प्रमाण-पत्र भी मिलता है।

जयपुर में हुआ लव-जिहाद का मामला

ग्वालियर की एक युवती को जम्मू-कश्मीर के एक युवक ने जयपुर में लव-जिहाद में फंसाया। मामला तब प्रकाश में आया जब युवती ने फेसबुक पर ज्यादती का वीडियो वायरल किया और ग्वालियर जाने के लिये लोगों से मदद मांगी।

पुंछ जिले के सुरनकोट से वायरल हुए वीडियो में युवती अपनी गर्दन पर कटे का निशान व हाथ- पैरों में चोटों के निशान दिखाते हुए बता रही है कि वह ग्वालियर की रहने वाली है। काम के सिलसिले में जयपुर गई थी। यहां उसकी मुलाकात एक युवक से हुई। युवक ने अपनी पहचान और धर्म छिपाते हुए उसे प्यार के जाल में फंसाया। यह युवक छह माह पहले उसे अपने गांव ले गया। वहां पहुँचने के बाद उसे मालुम पड़ा कि युवक का असली नाम शौकत अली खान है। युवती ने यह भी कहा कि इन लोगों ने उसका धर्म परिवर्तन कराया। शादी के बाद परिवार के लोग उसके साथ मारपीट कर रहे हैं, उस पर जानलेवा हमला कर उसे घर से निकाल दिया है। वीडियो वायरल होने के बाद लड़की किसी तरह अपने माता-पिता के पास ग्वालियर पहुँच गई।

प्रशान्त भूषण अवमानना के दोषी- सुप्रीम कोर्ट फैसले के खिलाफ खड़ी हुई सेकुलर-बुद्धिजीवी गैंग

प्रशांत भूषण द्वारा सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीशों के खिलाफ की गई आपत्तिजनक टिप्पणियों (ट्वीट्स) के लिये सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें पिछले दिनों न्यायालय की अवमानना का दोषी पाया है।

अभी अदालत का सजा संबंधी आदेश जारी भी नहीं हुआ है, लेकिन सेकुलर-बुद्धिजीवी गठजोड़ ने सुप्रीम कोर्ट के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है और 3000 से ज्यादा हस्ताक्षर वाला एक बयान जारी किया है। इसमें प्रशांत भूषण की तरफदारी करते हुए कहा गया है कि सुप्रीम कोर्ट का फैसला वकीलों को हतोत्साहित करेगा तथा अवमानना के खतरे की वजह से उन्हें खामोश करेगा।

हस्ताक्षर करने वालों में वामपंथी विचारधारा वाले सुप्रीम कोर्ट-हाईकोर्ट के सेवानिवृत जज, वकील, पत्रकार, नेता शामिल हैं, जो जब-तब अपनी ताकत और रसूख का इस्तेमाल करते हुए चाहते हैं कि न्यायपालिका उनकी मर्जी की हो तथा हर फैसला उनके मन मुताबिक हो। इसी गठजोड़ का पर्दाफाश करते हुए सुप्रीम कोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई ने भी कहा था कि यदि कोई न्यायाधीश इनके मन मुताबिक फैसला नहीं दे तो ये लोग उसे किसी विचारधारा विशेष का घोषित कर दबाव बनाने का प्रयास करते हैं, जो कि न्याय प्रक्रिया तथा स्वतंत्र न्याय पालिका के हित में नहीं है।

देशभर के लगभग दो लाख वकीलों ने प्रस्ताव पारित कर सुप्रीम कोर्ट पर दबाव बनाने के लिए वाम-लिबरल गठजोड़ के हस्ताक्षर अभियान का विरोध किया है।

अभिनेता आमिर खान तुर्की राष्ट्रपति की पत्नी से मिले

आमिर खान अपनी आगामी फिल्म ''लाल सिंह चढ्ढा'' की शूटिंग के लिये तुर्की गये थे। वहां उन्होंने भारत के धुर विरोधी देश तुर्की के राष्ट्रपति की पत्नी एमीन एर्दोगन से इंस्तानबुल स्थित राष्ट्रपति भवन में मुलाकात की तथा इस मुलाकात की तस्वीरें सोशल मीडिया पर भी साझा की। इस मुलाकात को लेकर सोशल मीडिया के यूजर (उपायोगकर्ता) बड़ी संख्या में अभिनेता के प्रति नाराजगी प्रकट कर रहे हैं।

इस विरोध का प्रमुख कारण है तुर्की द्वारा पिछले कुछ समय से अपनाया गया भारत विरोधी या सही शब्दों में दुश्मनी वाला रुख । पिछले वर्ष कश्मीर से धारा 370 हटाने पर पाकिस्तान ने दुनिया भर में हो हल्ला मचाया था, किन्तु केवल तीन देश उसके समर्थन में आए, वे थे चीन, तुर्की और मलेशिया। इससे पहले तुर्की ने भारत में लागू सीएए का विरोध करते हुए भारत में मुसलमानों के नरसंहार का आरोप लगाया था।

यह भी उल्लेखनीय है कि वर्तमान राष्ट्रपति रिसेप तैयप एर्दोगन तुर्की में एक के बाद एक कट्टर इस्लामिक नीतियां लागू कर रहा है, जिसका ताजा उदाहरण 1500 वर्ष पुराने गिरजाघर जो कि 1934 में एक वैश्विक धरोहर के रूप में हागिया सोफिया संग्रहालय बनाया गया था, को एर्दोगन ने मस्जिद में बदल दिया।

इसके बाद अब चौथी शताब्दी के ऐतिहासिक ऑर्थोडॉक्स चर्च कोरा को भी मस्जिद बनाने के आदेश जारी किए गए हैं।

बीते समय आमिर खान ने भारत के मित्र देश इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू से मुलाकात नहीं की तथा इसके औचित्य को लेकर बयान भी जारी किया था। यह वही अभिनेता है जिसे भारतीयों ने इतना प्यार, सम्मान दिया किन्तु मोदी सरकार के कार्यकाल (2015) में उन्होंने भारत को असहिष्णु बताते हुए कहा था कि उनके परिवार को अपनी सुरक्षा को लेकर भारत में डर लग रहा है। लेकिन भारत को असहिष्णु बताने वाला कोई भी व्यक्ति आज तक देश को त्यागकर पाकिस्तान या तुर्की जैसे इस्लामी देश का निवासी नहीं बना है।

शाहीन बाग प्रदर्शनकारी भाजपा में शामिल हुए

नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) और राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर (एनसीआर) के विरोध के नाम पर दिल्ली के शाहीनबाग में लगभग तीन माह तक विरोध प्रदर्शन करने वालों का अब इस आन्दोलन से मोह भंग होने लगा है। प्रदर्शन में शामिल रहे राष्ट्रीय उलेमा काउंसिल के सचिव एवं सामाजिक कार्यकर्ता शहजाद अली, डॉ. मेहरीन और आम आदमी पार्टी की कार्यकर्ता तबस्सुम हुसैन सहित शाहीन बाग में रहने वाले सैकड़ों लोग गत 16 अगस्त को भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गये।

इस अवसर पर शहजाद अली ने कहा कि राजनीतिक दलों ने अपने फायदे के लिये लोगों को सीएए और एनसीआर पर गुमराह किया है, भाजपा के खिलाफ लोगों को खड़ा किया गया। उन्होंने यह भी कहा कि केन्द्र सरकार सबका साथ-सबका विकास को आधार मानकर काम कर रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की नीतियों से प्रभावित होकर वे भाजपा में शामिल हो रहे हैं।

क्या पेड़ लगाना इस्लाम विरोधी है?

पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने गत 9 अगस्त को देश के सबसे बड़े वृक्षारोपण अभियान में सभी मुख्यमंत्रियों सहित आम लोगों को आमंत्रित किया था जिसमें 35 लाख पौधे लगाने का लक्ष्य रखा था। इसके बाद सोशल मीडिया पर पाकिस्तान का एक वीडियो वायरल हो रहा है, जिसमें दिखाया गया है कि लोग बड़ी संख्या में पौधों को उखाड़ रहे हैं। वीडियो के बारे में कहा जा रहा है कि वृक्षारोपण को इस्लाम विरोधी मानने वाले कट्टरपंथियों द्वारा पौधे उखाड़े जा रहे हैं।

यहां तक कि संयुक्त राष्ट्र के पूर्व पर्यावरण कार्यकारी निदेशक एरिक सोलहेम ने भी इस वीडियों को शेयर करने के साथ ही अपने ट्वीट में लिखा-''पाकिस्तान के प्रधानमंत्री ने हाल ही में बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण अभियान शुरु किया, लेकिन चरमपंथियों ने प्रधानमंत्री के महान प्रयासों पर हमला करते हुए दावा किया कि यह इस्लाम के खिलाफ है। पागलपन, सभी धर्म हमें धरती माँ की रक्षा की सीख देते हैं।''

जिस धर्म के मतावलम्बी सर्वत्र हिंसा में संलग्न हो मानवता के खिलाफ खड़े हों, उनसे प्रकृति या पर्यावरण संरक्षण की अपेक्षा करना ही मूर्खता है।

जम्मू-कश्मीर, लद्दाख में 1954 सड़कों और 86 पुलों का काम पूरा

जम्मू-कश्मीर और लद्दाख केन्द्र शासित प्रदेशों मे केन्द्र सरकार की प्रधानमंत्री ग्राम सड़क परियोजना के तहत इस वर्ष जुलाई के अंत तक 12216 किलोमीटर और 86 पुलों को कवर करने वाली 1954 सड़कों का काम पूरा हो चुका है।

ग्रामीण विकास मंत्रालय ने कहा है कि जम्मू-कश्मीर में 19277 किमी और 243 पुलों को कवर करने वाली 3261 सड़कों को मंजूरी दी गई है, जिनमें से 11517 किमी और 84 पुलों के साथ 1858 सड़कों का काम पूरा हो चुका है।

इसी तरह लद्दाख में 1207 किमी और 3 पुलों को मंजूरी दी गई है, जिनमें से 96 सड़कें ओर 2 पुल जुलाई 2020 तक पूरे हो गये हैं।

उत्तर बाल प्रश्नोत्तरी - 1.(ग) 2.(ख) 3.(क) 4.(घ) 5.(क) 6.(ख) 7.(ग) 8.(घ) 9.(क) 10.(घ)

आत्मनिर्भर भारतः सेना के लिये देशी थ्री लेयर सूट तथा हिम तापक बुखारी

भारतीय सैनिक सर्द हवाओं और बारिश के बीच माइनस 60 डिग्री सेल्सियस (जमाव बिन्दु से 60 डिग्री नीचे) में भी डटकर सीमाओं की रक्षा कर रहे हैं। इस विपरीत मौसम में उनकी हिफाजत के लिये आस्ट्रिया, स्विट्जरलैण्ड व डेनमार्क से विशेष तकनीक वाले सूट आयात किये जाते थे जो माइनस 40 डिग्री सेल्सियस तक ही कारगर थे।

अब आईआईटी खड़गपुर से प्रोडक्शन टेक्नालाजी में एमटेक करने वाले कानपुर के एक उद्यमी मयंक श्रीवास्तव ने आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत नायलान फेब्रिक का थ्री लेयर सूट तैयार किया है। यह सूट न केवल आयातित सूटों से ज्यादा कारगर है बल्कि इसका वजन भी मात्र 2 किलो 100 ग्राम है, जबकि पहले के गर्म कपड़ों का वजन सवा तीन किलो था। सेना के परीक्षण में खरा उतरने के बाद इसकी पहली खेप भेजने की तैयारी चल रही है।

कानपुर के एक अन्य उद्यमी अमित अग्रवाल ने सौर ऊर्जा, बिजली व केरोसीन तीनों से संचालित हिमतापक बुखारी विकसित की है जिससे 20 वर्ग मीटर क्षेत्रफल के बंकर और टेंट को गरम रखा जा सकता है। बुखारी में लगा चार्जर कंट्रोलर वोल्टेज नियंत्रित कर पंखे भी चलाता है, जिससे आग लगने का खतरा नहीं रहता। बुखारी के साथ 20 वाट का सोलर पेनल लगाया गया है। इसमें कुकिंग स्टैण्ड है जिस पर कुकर से दाल, चावल, खिचड़ी आदि बनाई जा सकती है। हिमतापक बुखारी के सफल परीक्षण के बाद डीआरडीओ ने इस उत्पाद को मान्यता दी है।

बंगाल में कट्टरपंथियों के फतवों के साथ खड़ी तृणमूल

पश्चिम बंगाल स्थित मुर्शिदाबाद के मुस्लिम बहुल गांवों में अजीबो गरीब फतवा जारी हुआ है। फतवे में कहा गया, टीवी देखना, कैरम खेलना, लाटरी खरीदना, फोन या कम्प्युटर का इस्तेमाल कर के गाने सुनना हराम है और इन सारे क्रियाकलापों को प्रतिबंधित किया जाता है।

'सोशल रिफार्मस् समिति' के बैनर तले जारी फतवे में कहा गया है कि अगर कोई इसका उल्लंघन करता पाया गया तो उस पर 500 रुपयों से लेकर 7,000 रुपए तक जुर्माना लगाया जाएगा। हैरानी की बात है कि कट्टरपंथियों के इस कृत्य को रोकने के स्थान पर सत्तारूढ़ ममता बनर्जी की पार्टी को इसमें कुछ गलत नहीं दिखता। एक तरह से ममता सरकार न केवल कट्टरपंथी मुल्लाओं के इस कृत्य का समर्थन कर रही है, बल्कि उनका बंगाल में महिमामंडन हो रहा है। ऐसे में आम मुसलमान के मन में भारत के प्रजातंत्र, संविधान और न्याय व्यवस्था में विश्वास कैसे पैदा होगा।

ममता सरकार के अल्पसंख्यक तुष्टीकरण और मुल्लाओं के समर्थन के कारण ही 2017 में कोलकाता के बऊ बाजार स्थित टीपू सुल्तान शाही मस्जिद के इमाम मौलाना नूरूर रहमान बरकती ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के खिलाफ फतवा जारी कर उनके सिर और दाढ़ी के बाल लाने वाले को 25 लाख का ईनाम देने की घोषणा करने की जुर्रत की थी।

चीन को एक और बड़ा झटका वंदे भारत रेक का टेंडर रद्द

भारत-चीन सीमा विवाद के चलते भारत सरकार ने चीन को एक और झटका देते हुए वंदे भारत ट्रेनों के 44 रेकों की खरीद का टेंडर रद्द कर दिया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार यह टेंडर चीनी कम्पनी के संयुक्त उपक्रम सीआरआरसी पायनियर इलेक्ट्रिक (भारत) प्रा.लि. को मिलने वाला था। वस्तुतः इस संयुक्त उपक्रम में भारतीय साझेदार केवल नाम मात्र का था तथा इन रेकों की आपूर्ति चीन से होने वाली थी। रेलवे द्वारा जारी विज्ञप्ति के अनुसार एक सप्ताह में नया टेंडर जारी किया जाएगा, जिसमें कि ''मेक इन इंडिया'' नीति के अनुरूप भारतीय कंपनियों को वरीयता दी जाएगी।

उल्लेखनीय है कि चीन के साथ सीमा पर तनाव शुरु होने के बाद कई चीनी कम्पनियों के सड़क निर्माण, पुल-ओवरब्रिज निर्माण, कानपुर-आगरा मेट्रो के लिए कोच सप्लाई तथा 5जी सेवा विस्तार जैसे कई ठेके रद्द कर दिए गए हैं। डिजिटल क्षेत्र में चीन के 106 मोबाइल एप्स तथा बिजली उपकरणों के आयात पर भी भारत ने प्रतिबंध लगाया है।

जयपुर में जलप्रलय के बाद सेवा कार्यों में जुटे संघ के स्वयंसेवक

जयपुर में 14 अगस्त को हुई मूसलाधार बरसात से बस्तियों व निचले क्षेत्रों में मिट्टी और जलभराव से लोगों का जीवन संकट में आ गया। पानी के तेज बहाव और कटाव के कारण लाल डूंगरी की गणेशपुरी कच्ची बस्ती के घरों में 6 से 8 फीट मिट्टी जमा हो गई। दर्जनों वाहन मिट्टी में दब गए। मिट्टी के जमा होने से घरों में जाना ही कठिन हो गया। स्वयंसेवकों ने श्रमदान कर कई घरों के अंदर भर चुकी मिट्टी को बाहर निकलवाया।

बस्ती के लोगों के लिए आसन्न संकट को देख संघ के स्वयंसेवक तत्काल मौके पर पहुँचे और राहत कार्य शुरु किये। लोगों के लिए दोनों समय के भोजन तथा कपड़ों का प्रबंध भी किया। उल्लेखनीय है कि गणेशपुरी बस्ती में अभावग्रस्त व वंचित श्रेणी के कई परिवार रहते हैं, जिनको न तो सरकारी योजनाओं का लाभ मिल रहा है और ना ही वे एक-दूसरे का आर्थिक सहयोग करने की स्थिति में हैं।

पृष्ठ 3 का शेष...

गत दिनों एक समाचार छपा था कि केरल की मुस्लिम महिला ने शादी के 15 वर्षों में 12 बच्चों को जन्म दिया। अभी उसकी उम्र 33 वर्ष है और अगले 10-15 वर्षों तक उसमें प्रजनन क्षमता होगी। इस जनसांख्यिकीय युद्ध में मुस्लिम कोख सबसे ताकतवर हथियार के रूप में सामने आई है। एक गैर मुस्लिम स्त्री के इस्लाम स्वीकार करने का सीधा मतलब है, एक गैर मुस्लिम कोख का मुस्लिम कोख में बदलना और ज्यादा जिहादी पैदा करना। इसलिये लव-जिहाद एक ऐसी योजना है, जिससे हिन्दू लड़कियों को झूठे प्रेम में फंसाने, फिर इस्लाम स्वीकार करने को मजबूर करने और बच्चे पैदा कर मुस्लिम आबादी बढाने का काम लिया जाता है।

इन घटनाओं की बढ़ोतरी के लिये बच्चों में बढ़ता स्वेच्छाचारी स्वभाव, घर से बाहर चेहरे को ढके रखना, अपने विचार, कार्य कलाप, मित्रों की जानकारी परिवार से छिपाना,सोशल मीडिया पर सक्रियता तथा सबसे बड़ा है परिवार द्वारा मूल्य आधारित तथा नैतिकतायुक्त जीवन प्रणाली के संस्कार न देना। यदि परिवार के बड़े स्वयं ही धार्मिक आचरण नहीं करते, तो बच्चे क्या सीखेंगे। कितने हिन्दू परिवार हैं जिनके घर प्रतिदिन सवेरे-शाम पूजा-आरती होती है, कम से कम एक समय का भोजन सभी मिलकर खाते हैं, दादा-दादी या माता-पिता के साथ दिनचर्या की चर्चा होती है तथा वे भी बच्चों को जीवन के अच्छे और बुरे पहलू का ज्ञान कराते हैं। नियंत्रण ना सही उनकी सोच व क्रिया कलाप के बारे में जानकारी रखना प्रत्येक माता-पिता का दायित्व है। प्रायः पाया गया है कि माता-पिता केवल अर्थ उपार्जन में ही सारा समय लगाते हैं तथा बच्चों के लिए मंहगी वस्तुएं, फैशनेबल कपड़े, भौतिक सुख साधन जुटा अपने कर्तव्य की इतिश्री समझते हैं। ऐसी स्थिति में बच्चों का परिवार तथा समाज से भावनात्मक जुडाव नहीं बनता। भावनात्मक रूप से कमजोर ऐसे बच्चे बाहरी दुनिया के भावपूर्ण प्रलोभन में अक्सर फंस जाते हैं।

कट्टरपंथियों की जिहादी मानसिकता, देश में बढ़ते लव-जिहाद के मामलों की रोकथाम के लिये सरकार को कड़े तथा प्रभावी कानूनी प्रावधान बनाने चाहिये। लेकिन यह काम अकेले सरकार के बस का नहीं है। हमें प्रबोधन द्वारा परिवारों में हिन्दू संस्कारों की प्रतिस्थापना करनी होगी, सुख-साधनों से कहीं ज्यादा परिवार को अपना समय देकर उन्हें भावनात्मक रूप से मजबूत, आचरण में जागरुक व दृढ़ बनाना होगा, तभी जिहादी साजिशों से अपने परिवार, समाज तथा राष्ट्र को बचाया जा सकेगा। ■

चीन के शिनजियांग में उइगरों की मस्जिद की जगह बनाया सार्वजनिक शौचालय

चीन में 18 करोड़ उइगर और अन्य मुसलमानों को निशाना बनाकर लगातार हमले किए जा रहे हैं। उन्हें डिटेंशन केम्पों में रखा जा रहा है, उनकी धार्मिक पहचान मिटाने के लिए दाढ़ी कटवाई जा रही है, उनके नाम से मुहम्मद हटवाया जा रहा है। उर्दू-फारसी भाषा की कुरान पढ़ने से रोका जा रहा है, महिलाओं के साथ बलात्कार, उनकी जबरन नसबंदी की जा रही है तथा उन्हें हान सम्प्रदाय के लोगों से शादी के लिए मजबूर किया जा रहा है। अब उनकी आस्था पर सीधी चोट कर उनके मनोबल को तोड़ने का मामला सामने आया है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार उत्तर-पश्चिमी चीन के शिनजियांग प्रांत के अतुश में कुछ माह पूर्व ढहाई गई मस्जिद के स्थान पर अब सार्वजनिक शौचालय का निर्माण किया गया है। स्पष्ट है , इसका उद्देश्य उइगर मुसलमानों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचा कर उन्हें प्रताड़ित व अपमानित करना है।

कश्मीर का रोना रोने वाली पाकिस्तान सरकार को चीन में मुस्लिम समुदाय पर होने वाले अत्याचार दिखाई ही नहीं देते। भारत की लिबरल-सेकुलर बिरादरी, काजी, मौलवी सब चुप हैं। भारत में छोटी से छोटी घटना पर शहर के शहर जलाने वाले, सुप्रीम कोर्ट में जनहित याचिका लगाने वाले, धरना प्रदर्शन करने वाले तथा खिलाफत आंदोलन की बरसी मनाने वालों के लिए यह एक अच्छा मौका है जब वे चीन जाकर जिहाद छेड़ें ।

चीन को भारी पड़ेगा भारतीय वायु- सीमा का अतिक्रमण

चीन के साथ सीमा विवाद के चलते भारतीय सेना भी अग्रिम मोर्चे पर अपनी स्थिति निरन्तर मजबूत कर रही है। इसी क्रम में अब भारतीय सैनिकों को कंधे पर रखकर चलाने वाली घातक मिसाइलें इगला वायु रक्षा प्रणाली के तहत मिल गई हैं।

ये मिसाइलें दुश्मन के विमान, हेलीकाप्टर अथवा ड्रोन को नजदीक आने पर मार गिराने में कारगर हैं। भारत की ओर से सीमा पार हवाई सुरक्षा के लिये रडार, सतह से लेकर हवाई मिसाइल, स्वदेशी हल्के हेलीकाप्टर, लड़ाकू विमान पहले से ही तैनात हैं।

इगला मिसाइलों की तैनाती से दुश्मन के विमान या ड्रोन भारतीय सीमा में आते ही मार गिराये जाएंगे । रक्षा स्टाफ के प्रमुख जनरल रावत ने गत 24 अगस्त को कहा कि लद्दाख में चीनी सेना से निपटने के लिये सैन्य विकल्प खुला है, लेकिन दोनों सेनाओं के बीच बातचीत और राजनयिक विकल्प विफल होने पर ही ऐसा किया जाएगा।

उत्तर महापुरुष पहचानो- लाला हरदयाल

SURYA FOUNDATION

B-3/330, Paschim Vihar, New Delhi - 110063, Tel. : 011-25251588, 25253681
Email : suryainterview@gmail.com Website : www.suryafoundation.org

सूर्या फाउण्डेशन युवाओं के समग्र विकास तथा प्रशिक्षण के लिए अब एक जानी-मानी संस्था बन चुकी है। इसका प्रमुख उद्देश्य है देश के प्रति निष्ठा रखते हुए अनेक तरह के उत्तरदायित्व निभाने के लिए तेजस्वी, लगनशील तथा धुन के पक्के नवयुवकों का निर्माण करना।

इन्टरव्यू में चयन हो जाने के बाद सूर्या साधना स्थली कैंपस में छः माह की ट्रेनिंग दी जाएगी। उसके बाद एक साल के लिए On Job Training (OJT) रहेगी।

संघ के संस्कारों में पले-बढ़े, सामाजिक कार्यों में रुचि रखने वाले, शारीरिक रूप से सक्षम युवकों के सूर्या फाउण्डेशन में प्रवेश हेतु निम्न categories में इंटरव्यू होगा–

Post	Experience	6 months Initial Training + 1 year OJT	After Training CTC
CA	IPCC / MTER (2 Yrs Experience)	3 - 4 L Per Annum	As per Performance
	Fresher	4 - 5 L Per Annum	- do -
	Experienced (upto 5 years)	6 - 8 L Per Annum	- do -
	Experienced (above 5 years)	9 - 12 L Per Annum	-do -
Engineers, Fresher & Experienced	B.Tech (IIT)	7.5 - 9 L Per Annum	- do -
	B.Tech (NIT)	4.5 - 5 L Per Annum	- do -
	B.Tech (Other Institutes)	2.4 - 3 L Per Annum	- do -
	M.Tech (IIT)	8.5 - 10 L Per Annum	- do -
	M.Tech (NIT)	5.5 - 7 L Per Annum	- do -
	M.Tech (Other Institutes)	3 - 3.6 L Per Annum	- do -
MBA	MBA (IIT + IIM)	15 L + Per Annum	- do -
	MBA (IIM)	12 - 15 L Per Annum	- do -
	MBA (Other Institutes)	2.4 - 3 L Per Annum	- do -
Post Graduate & Graduate	MCA, B.Ed., M.Ed., MSW, M.Sc., M.Com., M.A. *(Freshers / Experience) Ph.D.* *	2 - 3 L Per Annum	- do -
	Mass Communication (Media)	2.4 - 3 L Per Annum	- do -
	B.Com. with three years experience in accounts, purchase, store	2.4 L Per Annum	- do -
	B.Sc. BCA, BBA, BA, B.Com (Persuing / Passed)	1.2 L Per Annum	- do -
	Diploma	1.8 L Per Annum	- do -
Law	LLB	1.8 L - 2.4 L Per Annum	- do -
	LLM	3 L - 3.6 L Per Annum	- do -

- उपरोक्त Categories में अधिक प्रतिभाशाली छात्रों को इससे भी अधिक वेतन दे सकते हैं।

*** Ph.D. candidates भी आवेदन कर सकते हैं। salary interview के दौरान तय होगी।**

2. **Graduate Management Trainee (GMT)**

योग्यता– 2020 में 10वीं, 11वीं या 12वीं की परीक्षा पास करने वाले भैया आवेदन कर सकते हैं। पिछली कक्षा में न्यूनतम अंक 60% तथा गणित में 75% अंक प्राप्त किए हों। आयु : 18 वर्ष से कम। सूर्या ट्रेनिंग सेंटर में 6 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के बाद On Job Training (OJT) or Practical Campus Training (PCT) में भेजा जायेगा। OJT / PCT के साथ-साथ ग्रेजुएशन और MBA या MCA करने की सुविधा दी जायेगी। प्रारंभिक 6 महीनों की ट्रेनिंग के दौरान भोजन और आवास की सुविधा मुफ्त रहेगी, साथ ही 3000/- प्रतिमाह स्कॉलरशिप मिलेगा। On Job Training के दौरान आवास तथा पढ़ाई के साथ-साथ 11वीं में 6000/-, 12वीं में 7000/- Graduation 1st year में 9000/-, IIrd Year में 10500/-, IIIrd Year में 12000/-, MBA/MCA 1st Year में 15000/-, MBA/MCA IInd Year में 20000/- Stipend प्रतिमाह मिलेगा। MBA/MCA पूरा होने के बाद 30000/- और Work Performance के आधार पर प्रतिमाह वेतन इससे अधिक भी हो सकता है।

3. **Assistant Staff Cadre (ASC)**

योग्यता– 2020 में 10वीं, 11वीं या 12वीं की परीक्षा देने वाले भैया आवेदन कर सकते हैं। पिछली कक्षा में न्यूनतम अंक 55% एवं गणित में 60% अंक प्राप्त किए हों। आयु : 18 वर्ष से कम। सूर्या ट्रेनिंग सेंटर में 6 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के बाद OJT / PCT में भेजा जायेगा। प्रारंभिक 6 महीने की ट्रेनिंग के दौरान 3000/- प्रतिमाह Stipend मिलेगा तथा मुफ्त भोजन और रहने की व्यवस्था होगी। तीन वर्ष की OJT / PCT के दौरान Stipend - 1st year : 7,000/- प्रतिमाह व आवास, IInd year : 8,500/- प्रतिमाह व आवास, 3rd year : 10,000/- प्रतिमाह व आवास। After training 13,000/- (CTC) प्रतिमाह वेतन मिलेगा।

4. **Post Graduate Management Trainee (PGMT)**

योग्यता– 2020 में ग्रेजुएशन कर चुके भैया आवेदन कर सकते हैं। ग्रेजुएशन में न्यूनतम अंक 65% प्राप्त किए हों। आयु : 21 वर्ष से कम। सूर्या ट्रेनिंग सेंटर में 6 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के बाद 1 साल की On Job Training (OJT) or Practical Campus Training (PCT) में भेजा जायेगा। OJT / PCT के साथ-साथ (MBA, PG in Mass Communication) करने की सुविधा दी जायेगी। प्रारंभिक 6 महीनों की ट्रेनिंग के दौरान भोजन और आवास की सुविधा मुफ्त रहेगी। इस दौरान आवास तथा पढ़ाई के अलावा Post Graduation 1st year में 12,000/-, IIrd Year में 18,000/- Stipend प्रतिमाह मिलेगा। Post Graduation पूरा करने के बाद 25,000/- (CTC) प्रतिमाह वेतन मिलेगा।

आवेदन हिंदी या अंग्रेजी में ही भरकर भेजें। विस्तृत बायोडाटा के साथ-साथ यदि आपने NCC / NSS / OTC / ITC / शीत शिविर / PDC आदि कोई शिविर किया है तो उल्लेख करें। सेवा भारती / विद्या भारती / वनवासी कल्याण आश्रम के किसी विद्यालय / छात्रावास या संघ या परिषद अथवा विविध क्षेत्रों से संबंध रहा है तो कब और कैसे। सूर्या परिवार में कोई परिचित हों तो उनका नाम, विभाग भी जरूर लिखें। पढ़ाई का विवरण लिखते हुए, Mark sheet की फोटोकॉपी साथ जोड़ें।

कृपया विनम्रतापूर्वक बायोडाटा के साथ निम्नलिखित पते पर अपना CV / आवेदन भेजें। CV / आवेदन Email से भी भेज सकते हैं।

B-3/330, Paschim Vihar, New Delhi - 110063 | Email : suryainterview@gmail.com

आवेदन विज्ञापन छपने के एक माह के भीतर करें

राष्ट्रोन्नायक आचार्य शंकर

36

आलेख व चित्र
ब्रजराज राजावत

आचार्य ने सम्पूर्ण भारत का दो बार भ्रमण कर यहां के कण-कण को पवित्र कर धर्ममय कर दिया... हिन्दू धर्म में व्याप्त सारे मतभेदों, संशयों का अपने ज्ञान से शोधन कर नैराश्य से मुक्त किया... व उसे पुनः श्रेष्ठता प्रदान की।... वैदिक धर्म की एकजुटता और व्यवस्था के लिए उन्होंने चार मठों की स्थापना की...

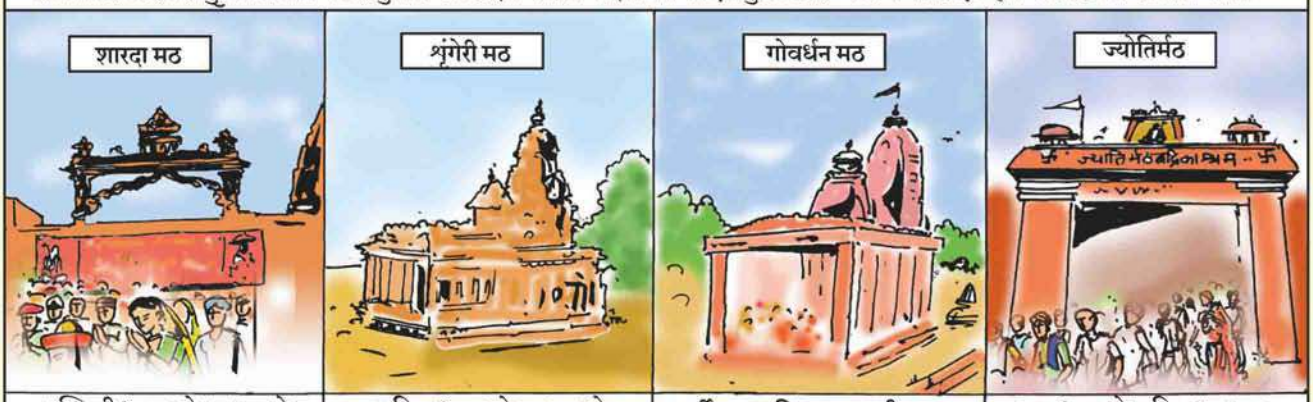

पश्चिमी भारत के इस मठ के आचार्य 'हस्तामलक' हुए	दक्षिण भारत के इस मठ के पीठाधिपति 'सुरेश्वराचार्य' हुए	पूर्वी भारत की जगन्नाथपुरी मठ पर 'पद्मपाद' विराजे	उत्तर भारत के बद्रिकाश्रम मठ पर 'त्रोटकाचार्य' आसीन हुए

पाक्षिक
पाथेय कण
1 सितम्बर, 2020
आर.एन.आई.पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY /202/2018-20
अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/ WPP - 01/2018-20

जल प्लावन (14 अगस्त 2020) से प्रभावित जयपुर के लाल डूँगरी क्षेत्र के गणेशपुरी बस्ती में सेवा कार्य करते हुए गालव नगर के स्वयंसेवक

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक माणक चन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी,ए-10,22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालयः पाथेय भवन, 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
सम्पादकः मेघराज खत्री
प्रेषण दिनांक 1,2,3,4 व 5 सितम्बर 2020 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में, _____